प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक "किशोर भारती" की पाठ्य सामग्री राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2005 का अनुसरण करते हुए विकसित की गई है, जिसके अनुसार शिक्षा को बाल–केंद्रित करते हुए व्यावहारिक जीवन से जोड़ने का प्रयास भी किया गया है।

पाठ्य सामग्री–निर्माण की इस प्रक्रिया के द्वारा बच्चों के मनोमस्तिष्क में स्कूली जीवन का आतंक समाप्त प्रायः होता चला जाएगा। वास्तव में स्कूली जीवन तथा व्यावहारिक जीवन के बीच का अंतराल ही बच्चों के लिये पहाड़ बन कर एक दुष्कर, अगम्य तथा अतिरिक्त प्रयास वाला कार्य बन जाता है। प्रस्तुत पाठ्य सामग्री बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए तैयार की गई है, जिसके द्वारा राष्ट्रीय जीवन के लिये अत्यंत कल्याणकारी सिद्ध हो सकती है। प्रस्तुत सामग्री का चयन भारत के स्वर्णिम भविष्य का सपना साकार कर सकता है, क्योंकि इसमें बहुत से गुणों को सम्मिलित किया गया है, जो इस प्रकार हैं :–

(क) पाठ्य सामग्री का चयन बच्चों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि पुस्तक में समाहित समस्त विषय बालोचित रूचि वाले तथा उनके लिये उपयोगी सिद्ध हो सकें।

(ख) पाठ्य सामग्री के चयन में विषयों की विविधता का भी विशेष ध्यान रखा गया है। विविधता से तात्पर्य साहित्यिक विधाओं (कहानी, निबन्ध, कविता, जीवनी

संस्मरण, रेखा चित्र, एकांकी आदि) से है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक सौंदर्य, देशप्रेम, नीति तथा कर्तव्य – भावना से ओतप्रोत कविताएँ भी दी गई हैं।

(ग) प्रत्येक पाठ के अन्त में अनेक प्रकार के प्रश्न दिये गए हैं, जिससे बच्चों को बौद्धिक व्यायाम करने का भी अवसर मिल सके। छात्रों में पठित विषयों को समझने तथा उस पर विचार करने के लिये बोध और विचार स्तम्भ के प्रश्न दिये गए हैं। इसके अतिरिक्त भाषाई योग्यता को विकसित करने के लिये भी कुछ अभ्यास दिये गए हैं। भाषाई अभ्यास के अन्तर्गत उच्चारण, वर्तनी, शब्द प्रयोग तथा वाक्य–विन्यास सम्बन्धी तत्त्वों को सम्मिलित किया गया है।

(घ) प्रस्तुत पुस्तक के अन्त में शब्द–भंडार है, जिस में कठिन शब्द अर्थ सहित दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ महत्त्वपूर्ण समानार्थक शब्द भी दिए गए हैं, जो वास्तव में समानार्थक नहीं होते हुए भी समानता का आभास देते हैं। इन मिलते–जुलते अर्थ वाले शब्दों द्वारा छात्र उनमें अतंर करते हुए उनमें से उपयुक्त शब्द का चुनाव करना सीख सकते हैं। इससे बच्चों के अन्दर विकसित होने वाली सृजन–प्रक्रिया में औचित्य का समावेश होता चला जाएगा।

प्रो० देश बन्धु गुप्ता
जम्मू कश्मीर बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

आभार

प्रस्तुत पुस्तक "किशेर भारती" भाग–1 कक्षा छठी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पद्धति–2005 के अनुरूप विकसित करने के लिये विद्वानों एवम् विषय–विशेषज्ञों का विशेष योगदान रहा जिन्होंने, बोर्ड द्वारा आयोजित प्रयोगशाला में अपनी अनवरत मेहनत द्वारा यथोचित पाठ्य सामग्री को पुस्तक में सम्मिलित करते हुए पुस्तक निर्माण के पवित्र कार्य को सम्पन्न किया। उपर्युक्त कार्य हेतु आयोजित कार्यशाला में अपना साहित्यिक योगदान देने वाले विद्वान इस प्रकार हैं :–

1. श्री केवल कृष्ण शर्मा – प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल, मुबारख मंडी, जम्मू
2. श्री शाम लाल शर्मा – सेवानिवृत्त प्राध्यापक
3. कुमारी रीटा चाड़क – प्राध्यापक गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल, सरवाल

उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त सी० डी० आर० विंग० के जिन अधिकारियों का योगदान रहा वे निम्नलिखित हैं :–

1. सुरेन्द्र मोहन महाजन – डिप्टी डायरैक्टर अकैडमिक (सी० डी० आर० विंग०)
2. डॉ० बंसी लाल शर्मा – शैक्षिक पदाधिकारी
3. डॉ० यासिर हामिद सिरवाल – शैक्षिक पदाधिकारी (सी० डी० आर० विंग०)
4. मोहम्मद जमील
5. श्री प्रदीप कुमार – शैक्षिक पदाधिकारी (सी० डी० आर० विंग०)

इसके अतिरिक्त कम्प्यूटर द्वारा अभीष्ट पाठ्य सामग्री को पुस्तकीय रूप में लाने के लिये श्री मुकेश रकवाल जी और नेहा बिन्दरू का विशेष योगदान रहा, जिसने बोर्ड के अमूल्य समय को ध्यान में रखते हुए कार्य को सम्पन्न करने का प्रयास किया।

इन सभी सदस्यों के प्रति मैं अपनी तथा बोर्ड की ओर से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने पुस्तक–निर्माण के इस पवित्र कार्य को सम्पन्न करने में अपना सराहनीय योगदान दिया।

डॉ० शेख बशीर अहमद
सैक्ट्री / डायरैक्टर अकैडमिक
जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

पाठ–सूची

1.	वह चिड़िया जो	1–5
2.	बचपन	6–14
3.	नादान दोस्त	15–26
4.	अक्षरों का महत्व	27–33
5.	चाँद से थोड़ी–सी गप्पें	34–38
6.	साथी हाथ बढ़ाना	39–43
7.	ऐसे–ऐसे	44–54
8.	टिकट–अलबम	55–67
9.	मैं सबसे छोटी होऊँ	68–70
10.	लोकगीत	71–78
11.	देश–गान	79–80
12.	सेनापति ताँत्या टोपे	81–88
13.	श्री वैष्णों देवी की यात्रा	89–94
14.	पहली बूँद	95–98
15.	शिष्टाचार	99–105
16.	बाल–वर्णन	106–109

1. वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो–
चोंच मार कर
दूध–भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो–
कंठ खोल कर
बूढ़े वन–बाबा की खातिर
रस उँडेल कर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो–
चोंच मार कर
चढ़ी नदी का दिल टटोल कर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

– केदारनाथ अग्रवाल

प्रश्न–अभ्यास

कविता से

1. कविता पढ़कर तुम्हारे मन में चिड़िया का जो चित्र उभरता है, उस चित्र को कागज़ पर बनाओ।
2. तुम्हें कविता को कोई और शीर्षक देना हो तो क्या शीर्षक देना चाहोगे ? उपयुक्त शीर्षक सोच कर लिखो।
3. इस कविता के आधार पर बताओ कि चिड़िया को किन–किन चीज़ों से प्यार है ?
4. कवि ने चिड़िया को छोटी, संतोषी, मुँह बोली और गरबीली चिड़िया क्यों कहा है ?
5. आशय स्पष्ट करो –

   (क) रस उँडेल कर गा लेती है

   (ख) जल का मोती ले जाती है

अनुमान और कल्पना

1. कवि ने नीली चिड़िया का नाम नहीं बताया है। वह कौन–सी चिड़िया रही होगी ? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए भारत की चिड़ियों के बारे में सबसे अधिक जानकारी रखने वाले पक्षी–विज्ञानी सालिम अली की पुस्तक 'भारतीय पक्षी' देखो। उसमें ऐसे सभी पक्षियों का विस्तार से वर्णन है, जो हमारे देश में पाए जाते हैं। इनमें ऐसे पक्षी भी शामिल हैं, जो जाड़े में एशिया के उत्तरी भाग और अन्य ठंडे देशों से भारत आते हैं। सालिम अली की पुस्तक देखकर तुम अनुमान लगा सकते हो कि इस कविता में वर्णित नीली चिड़िया शायद इनमें से कोई एक रही होगी –

   नीलकंठ
   छोटा किलकिला
   कबूतर
   बड़ा पतरिंगा

2. नीचे पक्षियों के कुछ नाम दिए गए हैं। उनमें यदि कोई पक्षी एक से अधिक रंग का है तो लिखो कि उसके किस हिस्से का रंग कैसा है ? जैसे तोते की चोंच लाल है, शरीर हरा है।

   मैना कौआ बतख कबूतर

3. कविता का यह बंध 'वह चिड़िया जो' से शुरू होता है और 'मुझे... बहुत प्यार है' पर खत्म होता है। तुम भी दी गईं इन पंक्तियों का अपनी कल्पना से प्रयोग करते हुए कविता में कुछ नए बंध जोड़ो।

भाषा की बात

1. <u>पंखों वाली</u> चिड़िया <u>ऊपरी वाली</u> दराज़
   <u>नीले पंखों वाली</u> चिड़िया <u>सबसे ऊपर वाली</u> दराज़

यहाँ रेखांकित शब्द विशेषण का काम कर रहे हैं। अगले पृष्ठ पर 'वाला/वाली' जोड़कर बनने वाले कुछ और विशेषण दिए गए हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों की तरह इनके आगे एक–एक विशेषण और जोड़ो –

..... मोरों वाला बाग
..... पेड़ों वाला घर
..... फूलों वाली क्यारी
..... खादी वाला कुर्ता
..... रोने वाला बच्चा
..... मूंछों वाला आदमी

2. वह चिड़िया ..... जुंडी के दाने रुचि से ..... खा लेती है।
वह चिड़िया ..... रस उँडेल कर गा लेती है।
कविता की इन पंक्तियों में मोटे छापे वाले शब्दों को ध्यान से पढ़ो। पहले वाक्य में 'रुचि से' खाने के ढंग की और दूसरे वाक्य में 'रस उँडेल कर' गाने के ढंग की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये दोनों क्रिया–विशेषण हैं। नीचे दिए वाक्यों में कार्य के ढंग या रीति से संबंधित क्रिया–विशेषण छाँटो–

(क) सोनाली जल्दी–जल्दी मुँह में लड्डू ठूँसने लगी।
(ख) गेंद लुढ़कती हुई झाड़ियों में चली गई।
(ग) भूकंप के बाद मुज़्फ्फराबाद की ज़िंदगी धीरे–धीरे सामान्य होने लगी।
(घ) कोई सफेद–सी चीज़ धप्प से आँगन में गिरी।
(ङ) इबोबी फुर्ती से चोर पर झपटा।
(च) तेजिंदर सहमकर कोने में बैठ गया।
(छ) यह पत्र मिलते ही फ़ौरन घर चली आओ।
(ज) आज अचानक ठंड बढ़ गई है।

2. बचपन

मैं तुम्हें अपने बचपन की ओर ले जाऊँगी।

मैं तुमसे कुछ इतनी बड़ी हूँ कि तुम्हारी दादी भी हो सकती हूँ, तुम्हारी नानी भी। बड़ी बुआ भी– बड़ी मौसी भी। परिवार में मुझे सभी लोग जीजी कहकर ही पुकारते हैं।

हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा–बड़ा यानी उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ। शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी। मेरे पहनने–ओढ़ने में भी काफी बदलाव आए हैं। पहले मैं रंग–बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ। नीला–जामुनी–ग्रे–काला–चॉकलेटी। अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफेद पहनो। गहरे नहीं, हलके रंग। मैंने पिछले दशकों में तरह–तरह की पोशाकें पहनी हैं। पहले फ्रॉक, फिर निकर–वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते।

बचपन के कुछ फ्रॉक तो मुझे अब तक याद हैं।

हलकी नीली और पीली धारीवाला फ्रॉक। गोल कॉलर और बाजू पर भी गोल कफ।

एक हलके गुलाबी रंग का बारीक चुन्नटोंवाला घेरदार फ्रॉक। नीचे गुलाबी रंग की फ्रिल।

उन दिनों फ्रॉक के ऊपर की जेब में रूमाल और बालों में इतराते रंग–बिरंगे रिबन का चलन था।

लैमन कलर का बड़े प्लेटोंवाला गर्म फ्रॉक जिसके नीचे फर टँकी थी।

दो ट्यूनिक भी याद हैं। एक चॉकलेट रंग का और अंदर की कोटी प्याज़ी। दूसरा ग्रे और उसके साथ सफेद कोटी।

का कमाल है। नीचे से तिरछी लपेटते हुए ऊपर से इतनी चौड़ी कि चने आसानी से हथेली पर पहुँच जाएँ। एक वक्त था जब फिल्म का गाना–चना ज़ोर गरम बाबू मैं लाया मज़ेदार, चना ज़ोर गरम– यह गाना उन दिनों स्कूल के हर बच्चे को आता था।

कुछ बच्चे पुड़िया पर तेज़ मसाला बुरकवाते। पूरा गिरजा मैदान घूमने तक यह पुड़िया चलती। एक–एक चना पापड़ी मुँह में डालने और कदम उठाने में एक खास ही लय–रफ़्तार थी।

छुटपन में हमने शिमला रिज पर बहुत मज़े किए हैं। घोड़ों की सवारी की है। शिमला के हर बच्चे को कभी–न–कभी यह मौका मिल ही जाता था।

हम जाने क्यों घोड़ों को कुछ कमतर करके समझते। उन पर हँसते थे। ननिहाल के घोड़े खूब हृष्ट–पुष्ट और खूबसूरत। उनकी बात फिर कभी।

शाम को रंग–बिरंगे गुब्बारे। सामने जाखू का पहाड़। ऊँचा चर्च। चर्च की घंटियाँ बजतीं तो दूर–दूर तक उनकी गूँज फ़ैल जाती। लगता, इसके संगीत से प्रभु ईशू स्वयं कुछ कह रहे हैं।

सामने आकाश पर सूर्यास्त हो रहा है। गुलाबी सुनहरी धारियाँ नीले आसमान पर फ़ैल रही हैं। दूर–दूर फ़ैले पहाड़ों के मुखड़े गहराने लगे और देखते–देखते बत्तियाँ टिमटिमाने लगीं। रिज पर की रौनक और माल की दुकानों की चमक के भी क्या कहने! स्कैंडल प्वाइंट की भीड़ से उभरता कोलाहल।

सरवर, स्कैंडल प्वाइंट के ठीक सामने उन दिनों एक दुकान हुआ करती थी, जिसके शोरूम में शिमला–कालका ट्रेन का मॉडल बना हुआ था। इसकी पटरियाँ–उस पर खड़ी छोटे–छोटे डिब्बों वाली ट्रेन। एक ओर लाल टीन की छतवाला स्टेशन और सामने सिगनल देता खंबा–थोड़ी–थोड़ी दूर पर बनी सुरंगे!

पिछली सदी में तेज़ रफ़्तारवाली गाड़ी वही थी। कभी–कभी हवाई जहाज़ भी देखने को मिलते! दिल्ली में जब भी उनकी आवाज़ आती, बच्चे उन्हें देखने बाहर

दौड़ते। दीखता एक भारी–भरकम पक्षी उड़ा जा रहा है, पंख फ़ैलाकर। यह देखो और वह गायब! उसकी स्पीड ही इतनी तेज़ लगती। हाँ, गाड़ी के मॉडलवाली दुकान के साथ एक और ऐसी दुकान थी, जो मुझे कभी नहीं भूलती। यह वह दुकान थी, जहाँ मेरा पहला चश्मा बना था। वहाँ आँखों के डॉक्टर अंग्रेज़ थे।

शुरू–शुरू में चश्मा लगाना बड़ा अटपटा लगा। छोटे–बड़े मेरे चेहरे की ओर देखते और कहते–आँखों में कुछ तकलीफ़ है! इस उम्र में ऐनक! दूध पिया करो। मैं डॉक्टर साहिब का कहा दोहरा देती–कुछ देर पहनोगी तो ऐनक उतर जाएगी।

वैसे डॉक्टर साहिब ने पूरा आश्वासन दिया था, लेकिन चश्मा तो अब तक नहीं उतरा। नंबर बस कम ही होता रहा! मैं अपने–आप इसकी ज़िम्मेवार हूँ। जब आप दिन की रोशनी को छोड़कर रात में टेबल लैंप के सामने काम करेंगी–तो इसके अलावा और क्या होगा! हाँ, जब पहली बार मैंने चश्मा लगाया तो, मेरे एक चचेरे भाई ने मुझे छेड़ा–देखो, देखो, कैसी लग रही है!

आँख पर चश्मा लगाया
ताकि सूझे दूर की
यह नहीं लड़की को मालूम
सूरत बनी लंगूर की!

मैं खीजी कि मुझ पर यह क्यों दोहराया जा रहा है! पर शेर बुरा न लगा। जब वह चाय पीकर चले गए तो, मैं अपने कमरे में जाकर आईने के सामने खड़ी हो गई। कई बार अपने को देखा। ऐनक उतारी। फिर पहनी। फिर उतारी। देखती रही–देखती रही।

सूरत बनी लंगूर की–
नहीं–नहीं–नहीं–
हाँ–हाँ–हाँ

मैंने अपने छोटे भाई का टोपा उठाकर सिर पर रखा। कुछ अजीब लगा। अच्छा भी और मज़ाकिया भी।

तब की बात थी, अब तो चेहरे के साथ घुल–मिल गया है चश्मा। जब कभी उतरा हुआ होता है, तो चेहरा खाली–खाली लगने लगता है।

याद आ गया वह टोपा–काली फ्रेम का चश्मा और लंगूर की सूरत! हाँ, इन दिनों शिमला में मैं सिर पर टोपी लगाना पसंद करती हूँ। मैंने कई रंगों की जमा कर ली हैं। कहाँ दुपट्टों का ओढ़ना और कहाँ सहज सहल सुभीते वाली हिमाचली टोपियाँ!

– कृष्ण सोबती

प्रश्न–अभ्यास

संस्मरण से

1. उम्र बढ़ने के साथ–साथ लेखिका में क्या–क्या बदलाव हुए हैं ? पाठ से मालूम करके लिखो।
2. लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या–क्या काम करती थीं ?
3. 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।' – यह कहकर लेखिका क्या–क्या बताती हैं?
4. पाठ से पता करके लिखो कि लेखिका के चश्मा लगाने पर उनके चचेरे भाई उन्हें क्यों छेड़ते थे?
5. लेखिका बचपन में कौन–कौन सी चीज़ें मज़ा ले–लेकर खाती थीं? उनमें से प्रमुख फलों के नाम लिखो।

2. संस्मरण में आए अंग्रेज़ी के शब्दों को छाँटकर लिखो और उनके हिंदी अर्थ जानो।

3. चार दिन, कुछ व्यक्ति, एक लीटर दूध आदि शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दो तो पता चलेगा कि इसमें चार, कुछ और एक लीटर शब्द से संख्या या परिमाण का आभास होता है, क्योंकि ये संख्यावाचक विशेषण हैं। इसमें भी चार दिन से निश्चित संख्या का बोध होता है, इसलिए इसको निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं और कुछ व्यक्ति इसे अनिश्चित संख्या का बोध होने से इसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। इसी प्रकार एक लीटर दूध से परिमाण का बोध होता है, इसलिए इसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। अब तुम नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो और उनके सामने विशेषण के भेदों को लिखो –

(क) मुझे दो दर्जन केले चाहिए।

(ख) दो किलो अनाज दे दो।

(ग) कुछ बच्चे आ रहे हैं।

(घ) तुम्हारा सारा प्रयत्न बेकार रहा।

(ङ) सभी लोग हँस रहे थे।

(च) तुम्हारा नाम बहुत सुंदर है।

4. कपड़ों में मेरी दिलचस्पियाँ मेरी मौसी जानती थीं।

इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'दिलचस्पियाँ' और 'मौसी' संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं।, इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण हैं। सर्वनाम कभी–कभी विशेषण का काम भी करते हैं। पाठ में से ऐसे पाँच उदाहरण छाँटकर लिखो।

कुछ करने को

1. क्या तुम अपनी पोशाक से खुश हो ? अगर तुम्हें अपनी पोशाक बनाने को कहा जाए तो, कैसी पोशाक बनाओगे और पोशाक बनाते समय किन बातों का ध्यान रखोगे ? अपनी कल्पना से पोशाक का डिज़ाइन बनाओ।

2. तीन–तीन के समूह साथियों के साथ कपड़ों के नमूने इकट्ठा करके कक्षा में बताओ। इन नमूनों को छूकर देखो और अंतर महसूस करो। यह भी पता करो कि कौन सा कपड़ा किस मौसम में पहनने के लिए अनुकूल है।
3. हथकरघा और मिल के कपड़े बनाने के तरीके के बारे में आसपास के बड़ों से पता करो। संभव हो तो किसी कपड़े के कारखाने में जाकर भी जानकारी इकट्ठी करो।
4. भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अलग–अगल प्रांतों में अलग–अगल भाषाएँ बोली जाती हैं, तरह–तरह के भोजन खाए जाते हैं, तरह–तरह की पोशाकें पहनी जाती हैं। कक्षा के बच्चे और शिक्षक अपने–अपने इलाकों की वेशभूषा के बारे में बातचीत करें। बच्चे इस काम में परिवार की भी मदद लें।

ध्यान देने योग्य शब्द

फ्रिल	–	जौ और बाजरे की बालियाँ
ऑलिव ऑयल	–	इच्छा, पसंद
कैस्टर ऑयल	–	जंगल
खुराक	–	गर्व करने वाली
स्टाक	–	संग्रह, भंडार
बुरकना	–	चूर्ण जैसी वस्तु को छिड़कना
छुटपन	–	बचपन
कमतर	–	ज़्यादा छोटा, लघुतर
हष्ट–पुष्ट	–	तगड़ा, हट्टा–कट्टा
कोलाहल	–	शोर, हंगामा, हल्ला
अटपटा	–	टेढ़ा, कठिन, ऊटपटांग
आश्वासन	–	भरोसा
खीझना	–	झुंझलाना, क्रुद्ध होना
सहल	–	आसान

3. नादान दोस्त

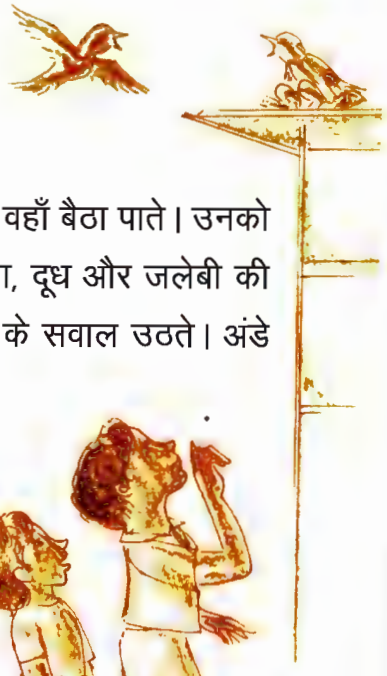

केशव के घर कार्निस के ऊपर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते–जाते देखा करते। सवेरे दोनों आँखें मलते कार्निस के सामने पहुँच जाते और चिड़ा और चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते। उनको देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मज़ा मिलता, दूध और जलेबी की सुध भी न रहती थी। दोनों के दिल में तरह–तरह के सवाल उठते। अंडे कितने बड़े होंगे ? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? क्या खाते होंगे ? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे ? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे ? घोंसला कैसा है ? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं। न अम्मा को घर के काम–धंधों से फुरसत थी न बाबू जी को पढ़ने–लिखने से। दोनों बच्चे आपस ही में सवाल–जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे।

श्यामा कहती–क्यों भइया, बच्चे निकलकर फुर्र से उड़ जाएँगे ?

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता–नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे। बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेगे ?

श्यामा–बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी ?

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था।

इस तरह तीन–चार दिन गुज़र गए। दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन–दिन बढ़ती जाती थी। अंडों को देखने के लिए वे अधीर हो उठते थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब ज़रूर बच्चे निकल आए होंगे। बच्चों के चारे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ। चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ पाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे। गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ–चूँ करके मर जाएँगे।

इस मुसीबत का अंदाज़ा करके दोनों घबरा उठे। दोनों ने फैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा–सा दाना रख दिया जाए। श्यामा खुश होकर बोली–तब तो चिड़ियों को चारे के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा न ?

केशव–नहीं, तब क्यों जाएँगी ?

श्यामा–क्यों भइया, बच्चों को धूप न लगती होगी ?

केशव का ध्यान इस तकलीफ़ की तरफ न गया था। बोला–ज़रूर तकलीफ़ हो रही होगी। बेचारे प्यास के मारे तड़पते होंगे। ऊपर छाया भी तो कोई नहीं।

आखिर यही फैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए। पानी की प्याली और थोड़े–से चावल रख देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया।

दोनों बच्चे बड़े चाव से काम करने लगे। श्यामा माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई। केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से ज़मीन पर गिरा दिया और उसे खूब साफ करके उसमें पानी भरा।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से आए ? फिर ऊपर बगैर छड़ियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और छड़ियाँ खड़ी होंगी कैसे ?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा। आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी। श्यामा से बोला–जाकर कूड़ा फेंकनेवाली टोकरी उठा लाओ। अम्माँ जी

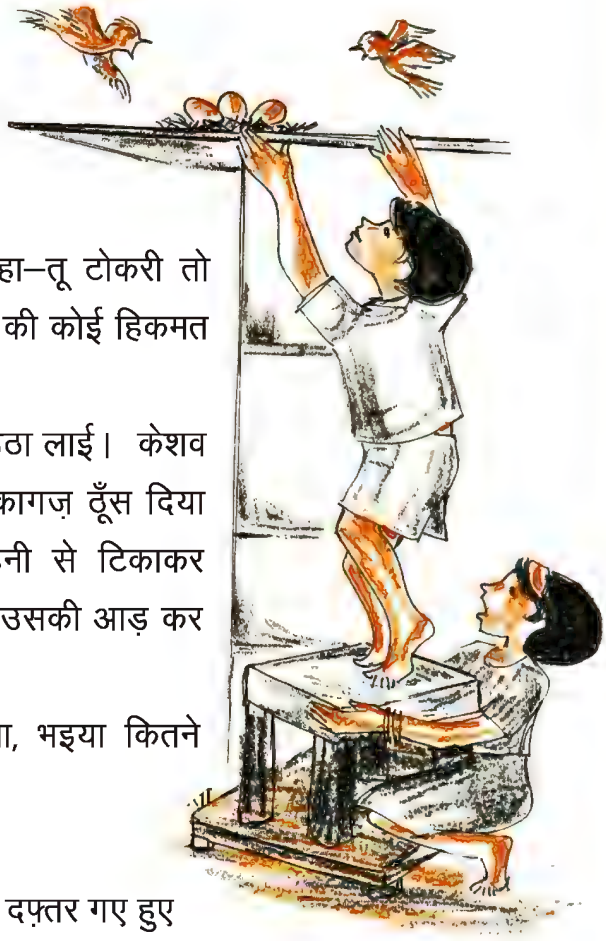

को मत दिखाना।

श्यामा–वह तो बीच से फटी हुई है। उसमें से धूप न जाएगी ?

केशव ने झुँझलाकर कहा–तू टोकरी तो ला, मैं उसका सूराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई। केशव ने उसके सूराख में थोड़ा–सा कागज़ ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला–देख, ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ कर दूँगा। तब कैसे धूप जाएगी ?

श्यामा ने दिल में सोचा, भइया कितने चालाक हैं!

2

गर्मी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। अम्माँ दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ ? अम्माँ जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके आँखें बंद किए, मौके का इंतज़ार कर रहे थे। ज्योंही मालूम हुआ कि अम्माँ जी अच्छी तरह से सो गईं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए। अंडों की हिफाज़त की तैयारियाँ होने लगीं। केशव कमरे से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला तो, नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते–डरते स्टूल पर चढ़ा।

श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी। स्टूल चारों टाँगें बराबर न होने के कारण, जिस तरफ ज़्यादा दबाव पाता था, ज़रा–सा हिल जाता था। उस वक्त केशव को कितनी तकलीफ़ उठानी पड़ती थी, यह उसी का दिल जानता था। दोनों हाथों से कार्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज़ से डाँटता–अच्छी तरह पकड़, वरना उतरकर बहुत मारूँगा। मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कार्निस पर था। बार–बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते।

केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं। केशव ने देखा, कार्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा–कै बच्चे हैं भइया ?

केशव–तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले।

श्यामा–ज़रा हमें दिखा दो भइया, कितने बड़े हैं ?

केशव–दिखा दूँगा, पहले ज़रा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं।

श्यामा दौड़कर अपनी पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा–हमको भी दिखा दो भइया।

केशव ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली–अब तुम उतर आओ, मैं भी तो देखूँ।

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा–जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा।

श्यामा प्याली और चावल भी लाई। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीज़ें रख

दीं और आहिस्ता से उतर आया।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा–अब हमको भी चढ़ा दो भइया। केशव–तू गिर पड़ेगी।

श्यामा–न गिरूँगी भइया, तुम नीचे से पकड़े रहना।

केशव–न भइया, कहीं तू गिर–गिरा पड़ी तो अम्माँ जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी। कहें कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर ? अब अंडे बड़े आराम से हैं। जब बच्चे निकलेंगे, तो उनको पालेंगे।

दोनों चिड़ियाँ बार–बार कार्निस पर आती थीं और बगैर बैठे ही उड़ जाती थीं। केशव ने सोचा, हम लोगों के डर से नहीं बैठतीं। स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा–तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्माँ जी से कह दूंगी।

केशव–अम्माँ जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ।

श्यामा–तो तुमने मुझे दिखया क्यों नहीं ?

केशव–और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते!

श्यामा–हो जाते, हो जाते। देख लेना मैं कह दूंगी!

इतने में कोठरी का दरवाज़ा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा–तुम दोनों बाहर कब निकल आए ? मैंने कहा न था कि दोपहर को न निकलना? किसने किवाड़ खोला ?

किवाड़ केशव ने खोला था, लेकिन श्यामा ने माँ से यह बात नहीं कही। उसे डर लगा कि भइया पिट जाएँगे। केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे। अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था। श्यामा सिर्फ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार हाने की वजह से इसका फ़ैसला

नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।

माँ ने दोनों को डाँट–डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे–धीरे उन्हें पंखा झलने लगी। अभी सिर्फ दो बजे थे। बाहर तेज़ लू चल रही थी। अब दोनों बच्चों को नींद आ गई थी।

3

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई कार्निस के पास आई और ऊपर की तरफ ताकने लगी। टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नज़र नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर ज़ोर से बोली–भईया, अंडे तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए।

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया, तो क्या देखता है कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की–सी चीज़ बाहर निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। सहमी हुई आँखों से ज़मीन की तरफ देखने लगा।

श्यामा ने पूछा–बच्चे कहाँ उड़ गए भईया ?

केशव ने करुण स्वर में कहा–अंडे तो फूट गए।

श्यामा–और बच्चे कहाँ गए?

केशव–तेरे सर में। देखती नहीं है अंडों में से उजला–उजला पानी निकल आया है। वही तो दो–चार दिनों में बच्चे बन जाते।

माँ ने सोटी हाथ में लिये हुए पूछा–तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो ?

श्यामा ने कहा–अम्माँ जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं। माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से बोलीं–तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा। अब तो श्यामा को भईया पर ज़रा भी तरस न आया। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वह नीचे गिर पड़े। इसकी उसे सज़ा मिलनी चाहिए। बोली–इन्होंने अंडों को छेड़ा था अम्माँ जी।

माँ ने केशव से पूछा–क्यों रे ?

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।

माँ–तू वहाँ पहुँचा कैसे ?

श्यामा–चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े अम्माँ जी।

केशव–तू स्टूल थाम नहीं खड़ी थी ?

श्यामा–तुम्हीं ने तो कहा था।

माँ–तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती।

श्यामा ने डरते–डरते पूछा–तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं अम्माँ जी?

माँ–और क्या करती! केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने!

केशव रोनी सूरत बनाकर बोला–मैंने तो सिर्फ अंडों को गद्दी पर रख दिया था अम्माँ जी! माँ को हँसी आ गई। मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफ़सोस होता रहा। अंडों की हिफाज़त करने के जोग में उसने उनका सत्यानाश कर डाला, इसे याद कर वह कभी–कभी रो पड़ता था। दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर न दिखाई दीं।

प्रेमचंद

प्रश्न–अभ्यास

कहानी से

1. केशव और श्यामा के मन में अंडों को देखकर तरह–तरह के सवाल क्यों उठते थे?
2. अंडों के बारे में दोनों आपस ही में सवाल–जवाब करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दे दिया करते थे ?
3. अंडों के टूट जाने के बाद माँ के यह पूछने पर कि – 'तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा।' के जवाब में श्यामा ने क्या कहा और उसने ऐसा क्यों किया ?
4. पाठ के आधार पर बताओ कि अंडे गंदे क्यों हुए और उन अंडों का क्या हुआ ?
5. सही उत्तर क्या है ?

   अंडों की देखभाल के लिए केशव और श्यामा धीरे से बाहर निकले क्योंकि–

   (क) वे माँ की नींद नहीं तोड़ना चाहते थे।

   (ख) माँ नहीं चाहती थीं कि वे चिड़ियों की देखभाल करें।

   (ग) माँ नहीं चाहती थीं कि वे बाहर धूप में घूमें।
6. केशव और श्यामा ने चिड़िया और अंडों की देखभाल के लिए किन तीन बातों का ध्यान रखा ?
7. कार्निस पर अंडों को देखकर केशव और श्यामा के मन में जो कल्पनाएँ आईं और उन्होंने चोरी–चुपके जो कुछ कार्य किए, क्या वे उचित थे ? तर्क सहित उत्तर लिखो।
8. पाठ से मालूम करो कि माँ को हँसी क्यों आई ? तुम्हारी समझ से माँ को क्या करना चाहिए था?

कहानी से आगे

1. पाठ में चिड़ियों की चर्चा है। तुम पेड़–पौधों और अन्य जीव–जंतुओं के बारे में जानकारी इकट्ठी करो। तुम्हारे आसपास जो मौजूद हों उसके साथ तुम्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसे लिखो।
2. केशव और श्यामा ने अंडों के बारे में क्या–क्या अनुमान लगाए ? यदि उस जगह तुम होते तो, क्या अनुमान लगाते और क्या करते ?
3. माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में बाहर क्यों निकल आए? माँ के पूछने पर भी दोनों में से किसी ने किवाड़ खोलकर दोपहर में बाहर निकलने का कारण क्यों नहीं बताया ?
4. प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' रखा। तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे ?

अनुमान और कल्पना

1. इस पाठ में गर्मी के दिनों की चर्चा है। अगर सर्दी या बरसात के दिन होते तो क्या–क्या होता ? अनुमान करो और अपने साथियों को सुनाओ।
2. पाठ पढ़कर मालूम करो कि दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर क्यों न दिखाई दीं ? वे कहाँ गई होंगी ? इस पर अपने दोस्तों के साथ मिलकर बातचीत करो।
3. अनजाने में हुई गलती पर केशव को कई दिनों तक अफ़सोस होता रहा। दोबारा उससे कोई ऐसी गलती न हो, इसके लिए तुम उसे क्या सुझाव दे सकते हो, इसे लिखो।
4. केशव और श्यामा चिड़िया के अंडों को लेकर बहुत उत्सुक थे। क्या तुम्हें भी किसी नई चीज़, जगह या बात पर कौतूहल महसूस हुआ है ? ऐसे किसी अनुभव का वर्णन करो और बताओ कि ऐसे में तुम्हारे मन में क्या–क्या सवाल उठे ?

(घ) केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा....

(ङ) श्याम ने गिड़गिड़ाकर कहा....

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखो। ये शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण का काम कर रहे हैं क्योंकि ये बताते हैं कि कहने, बोलने और उठने की क्रिया कैसे हुई। 'कर' वाले शब्दों के क्रियाविशेषण होने की एक पहचान यह भी है कि ये अक्सर क्रिया से ठीक पहले आते हैं। अब तुम भी इन पाँच क्रियाविशेषणों का वाक्यों में प्रयोग करो।

5. नीचे प्रेमचंद की कहानी 'सत्याग्रह' का एक अंश दिया गया है। तुम इसे पढ़ोगे तो पाओगे कि विराम चिह्नों के बिना यह अंश अधूरा–सा है। तुम आवश्यकता के अनुसार उचित जगहों पर विराम चिह्न लगाओ –

उसी समय एक खोमचेवाला जाता दिखाई दिया 11 बज चुके थे, चारों तरफ सन्नाटा छा गया था, पंडित जी ने बुलाया खोमचेवाले खोमचेवाला कहिए क्या दूँ भूख लग आई न अन्न–जल छोड़ना साधुओं का काम है हमारा आपका नहीं मोटेराम अबे क्या कहता है यहाँ क्या किसी साधु से कम हैं चाहें तो महीने पड़े रहें और भूख न लगे, तुझे तो केवल इस लिये बुलाया है कि ज़रा अपनी कुप्पी मुझे दे देखूँ तो, वहाँ क्या रेंग रहा है, मुझे भय होता है।

कुछ करने को

गर्मियों या सर्दियों में जब तुम्हारी लंबी छुट्टियाँ होती हैं, तो तुम्हारा दिन कैसे बीतता है ? अपनी बुआ या किसी और को एक पोस्टकार्ड पर पत्र लिखकर बताओ।

ध्यान देने योग्य शब्द

कार्निस	–	दीवार की कँगनी
तसल्ली	–	सांत्वना, दिलासा, ढाढ़स
फुर्र	–	छोटी चिड़ियों के उड़ने में होने वाली परों की अवाज़
पेचीदा	–	उलझनवाला, कठिन, टेढ़ा
अधीर	–	उतावला, आकुल
सूराख	–	छेद
हिकमत	–	युक्ति, उपाय
हिफ़ाज़त	–	रक्षा
चिथड़े	–	फटा–पुराना कपड़ा, गूदड़
आहिस्ता	–	धीरे से, धीरे–धीरे, धीमी आवाज़ से
यकायक	–	अचानक

आदमी ने इस धरती पर कोई पाँच लाख साल पहले जन्म लिया। धीरे–धीरे उसका विकास हुआ।

कोई दस हज़ार साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया। वह खेती करने लगा। वह पत्थरों के औज़ारों का इस्तेमाल करता था। फिर उसने ताँबे और काँसे के भी औज़ार बनाए।

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव व्यक्त किए। जैसे, पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र। इन चित्र–संकेतों से बाद में भाव–संकेत अस्तित्व में आए। जैसे, एक छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणों की द्योतक रेखाएँ खींचने पर वह 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' या 'धूप' का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव–संकेत अस्तित्व में आए।

तब जाकर काफी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की। अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। केवल छह हज़ार साल!

अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब–किताब को लिखकर रखने लगा। तबसे मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जबसे लिखना शुरू किया तबसे 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता है, जबसे आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं। इस प्रकार, इतिहास को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। उसके पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं।

अतः हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज नहीं करता, तो आज हम इतिहास को न जान पाते। हम यह न जान पाते कि पिछले कुछ हज़ार सालों में आदमी किस प्रकार रहता था, क्या–क्या सोचता था, कौन–कौन राजा हुए इत्यादि।

2. रेडियो की भाषा लिखित नहीं, मौखिक है। मौखिक भाषा का जीवन में क्या महत्त्व होता है? इसे शिक्षक को कक्षा में सुनाओ।
3. हर वैज्ञानिक खोज के साथ किसी–न–किसी वैज्ञानिक का नाम जुड़ा होता है, लेकिन अक्षरों के साथ ऐसा नहीं है, क्यों ? पता करो और शिक्षक को बताओ।
4. एक भाषा को कई लिपियों में लिखा जा सकता है। उसी तरह कई भाषाओं को एक ही लिपि में लिखा जा सकता है। आगे कुछ शब्द दिए गए हैं, जैसे– भारत, गांधी, भाषा। इन्हें एक से अधिक लिपियों में लिखो।

अनुमान और कल्पना

1. पुराने ज़माने में लोग यह क्यों सोचते थे कि अक्षर और भाषा की खोज ईश्वर ने की थी ? अनुमान लगाओ और बताओ।
2 अक्षरों के महत्त्व के साथ ही मनुष्य के जीवन में गीत, नृत्य और खेलों का भी महत्त्व है। अपने मित्रों के साथ बातचीत कर इनके महत्त्व के बारे में जानकारी इकट्ठी करो और शिक्षक को सुनाओ।
3. कल्पना करो कि यदि हमें अक्षरों का ज्ञान न होता तो क्या होता ? लिखो।

भाषा की बात

1. <u>अनादि काल</u> में रेखांकित शब्द का अर्थ है, जिसकी कोई शुरुआत या आदि न हो। नीचे दिए गए शब्द भी मूल शब्द के शूरू में कुछ जोड़ने से बने हैं। इसे उपसर्ग कहते हैं। इन उपसर्गों को अलग करके लिखो और मूल शब्दों को लिखकर उनका अर्थ समझो–

असफल	.....	अदृश्य	.....
अनुचित	.....	अनावश्यक	.....

अपरिचित ..... अनिच्छा .....

(क) अब बताओ कि ये उपसर्ग जिन शब्दों के साथ जुड़ रहे हैं क्या उनमें कोई अंतर है ?

(ख) उपर्युक्त शब्दों से वाक्य बनाओ और समझो कि ये संज्ञा हैं या विशेषण। वैसे तो संख्याएँ संज्ञा होती हैं, पर कभी–कभी ये विशेषण का काम भी करती हैं, जैसे नीचे लिखे वाक्या में–

हमारी धरती लगभग पाँच अरब साल पुरानी है।

कोई दस हज़ार साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया।

इन वाक्यों में रेखांकित अंश 'साल' संज्ञा के बारे में विशेष जानकारी दे रहे हैं, इसलिए संख्यावाचक विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण का इस्तेमाल उन्हीं चीज़ों के लिए होता है, जिन्हें गिना जा सके। जैसे, चार संतरे, पाँच बच्चे, तीन शहर आदि। पर यदि किसी चीज़ को गिना नहीं जा सकता तो, उसके साथ संख्या वाले शब्दों के अलावा माप–तौल आदि के शब्दों का इस्तेमाल भी किया जाता है–

– तीन जग पानी

– एक किलो जीरा

यहाँ रेखांकित हिस्से परिमाणवाचक विशेषण हैं, क्योंकि इनका संबंध माप–तौल से है। अब नीचे लिखे हुए को पढ़ो। खाली स्थानों में बॉक्स में दिए गए माप–तौल के उचित शब्द छाँटकर लिखो।

प्याला	कटोरी	एकड़	मीटर
लीटर	किलो	ट्रक	चम्मच

तीन .....खीर दो.....ज़मीन

छह .....कपड़ा. एक..... रेत

दो .....कॉफी पाँच.....बाजरा

5. चाँद से थोड़ी–सी गप्पें

(एक दस–ग्यारह साल की लड़की)

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों–जड़ा
सिर्फ़ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा–चिट्टा
गोल–मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
– खूब हैं गोकि।
वाह जी, वाह!

दिन कारण

पूर्णिमा .....

अष्टमी से पूर्णिमा के बीच .....

प्रथमा से अष्टमी के बीच .....

5. नई कविता में तुक या छंद के बजाय बिंब का प्रयोग अधिक होता है, बिंब वह तस्वीर होती है, जो शब्दों को पढ़ते समय हमारे मन में उभरती है। कई बार कुछ कवि शब्दों की ध्वनि की मदद से ऐसी तस्वीर बनाते हैं और कुछ कवि अक्षरों या शब्दों को इस तरह छापने पर बल देते हैं कि उनसे कई चित्र हमारे मन में बनें। इस कविता के अंतिम हिस्से में चाँद को एकदम गोल बताने के लिए कवि ने बि ल कु ल शब्द के अक्षरों को अलग–अलग करके लिखा है। तुम इस कविता के और किन शब्दों को चित्र की आकृति देना चाहोगे ? ऐसे शब्दों को अपने ढंग से लिखकर दिखाओ।

अनुमान और कल्पना

1. कुछ लोग बड़ी जल्दी चिढ़ जाते हैं, यदि चाँद का स्वभाव भी आसानी से चिढ़ जाने का हो, तो वह किन बातों से सबसे ज़्यादा चिढ़ेगा ? चिढ़कर वह उन बातों का क्या जवाब देगा ? अपनी कल्पना से चाँद की ओर से दिए गए जवाब लिखो।
2. यदि कोई सूरज से गप्पें लगाए तो, वह क्या लिखेगा ? अपनी कल्पना से गद्य या पद्य में लिखो। इसी तरह की कुछ और गप्पें निम्नलिखित से किसी एक या दो से करके लिखो –

पेड़ बिजली का खंभा सड़क पैट्रोल पंप

भाषा की बात

1. चाँद संज्ञा है। चाँदनी रात में चाँदनी विशेषण है।

नीचे दिए गए विशेषणों को ध्यान से देखो और बताओ कि कौन–सा प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण बन रहे हैं। इन विशेषणों के लिए एक–एक उपयुक्त संज्ञा भी लिखो –

गुलाबी पगड़ी / मखमली घास / कीमती गहने

ठंडी रात / जंगली फूल / कश्मीरी भाषा

2. गोल–मटोल गोरा–चिट्टा

कविता में आए शब्दों के इन जोड़ों में अंतर यह है कि चिट्टा का अर्थ सफेद है और गोरा से मिलता–जुलता है जबकि मटोल अपने–आप में कोई शब्द नहीं है। यह शब्द 'मोटा' से बना है। ऐसे चार–चार शब्द युग्म सोचकर लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

3. 'बिलकुल गोल' – कविता में इसके दो अर्थ हैं –

(क) गोल आकार का

(ख) गायब होना!

ऐसे तीन शब्द सोचकर उनसे ऐसे वाक्य बनाओ कि शब्दों के दो–दो अर्थ निकलते हों।

4. जोकि, चूँकि, हालाँकि– कविता की जिन पंक्तियों में ये शब्द आयें हैं, उन्हें ध्यान से पढ़ो। ये शब्द दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य बनाओ।

5. गप्प, गप–शप, गप्पबाज़ी – क्या इन शब्दों के अर्थ में अंतर है ? तुम्हें क्या लगता है? लिखो।

कुछ करने को

1. क्या तुम जानते हो दुनिया भर में कई प्रकार के कैलेंडरों का इस्तेमाल होता है।

6. साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।
हम मेहनत वालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें
साथी हाथ बढ़ाना।
मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक

अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना।
एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत
साथी हाथ बढ़ाना।

– साहिर लुधियानवी

प्रश्न–अभ्यास

गीत के बारे में

1. यह गीत किसको संबोधित है ?
2. इस गीत की किन पंक्तियों को तुम अपने आसपास की ज़िंदगी में घटते हुए देख सकते हो ?
3. 'सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया' – साहिर ने एकसा क्यों कहा है ? लिखो।
4. गीत में सीने और बाँह को फ़ौलादी क्यों कहा गया है ?

गीत से आगे

1. अपने आसपास तुम किसे 'साथी' मानते हो और क्यों ? इससे मिलते–जुलते दस शब्द अपने शब्द भंडार में जोड़ो।
2. 'अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक'

   कक्षा, मोहल्ले और गाँव के किस–किस तरह के साथियों के बीच तुम इस वाक्य की सच्चाई को महसूस कर पाते हो और कैसे ?
3. इस गीत को तुम किस माहौल में गुनगुना सकते हो ?
4. 'एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना' –

   (क) तुम अपने घर में इस बात का ध्यान कैसे रख सकते हो ?

   (ख) पापा के काम और माँ के काम क्या–क्या हैं ?

   (ग) क्या वे एक –दूसरे का हाथ बँटाते हैं ?
5. यदि तुमने 'नया दौर' फिल्म देखी है, तो बताओ कि यह गीत फिल्म में कहानी के किस मोड़ पर आता है ? फिल्म देखो और बताओ।

भाषा की बात

1. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

   एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं।

   (क) ऊपर लिखी कहावतों का अर्थ गीत की किन पंक्तियों से मिलता–जुलता है ?

   (ख) इन दोनों कहावतों का अर्थ कहावत–कोश में देखकर समझो और वाक्य के संदर्भ में उनका प्रयोग करो।
2. नीचे हाथ से संबंधित कुछ मुहावरे दिए हैं। इनके अर्थ समझो और प्रत्येक मुहावरे से वाक्य बनाओ –

(क) हाथ को हाथ न सूझना

(ख) हाथ साफ करना

(ग) हाथ–पैर फूलना

(घ) हाथों–हाथ लेना

(ङ) हाथ लगना

कुछ करने को

1. बात करते समय हाथ हमारी बात को प्रभावशाली ढंग से दूसरे तक पहुँचाते हैं–

'क्यों' पूछते हाथ	दुआ माँगते हाथ	मना करते हाथ
समझाते हाथ	बुलाते हाथ	आरोप लगाते हाथ
चेतावनी देते हाथ	नारा लगाते हाथ	सलाम करते हाथ

इनका प्रयोग हम कब–कब करते हैं ? लिखिए।

2. नीचे दिए शब्दों में 'हाथ' शब्द छिपा है। इन शब्दों को पढ़कर समझो और बताओ कि हाथों का इनमें क्या काम है ?

हथकड़ी	हथगोला	हत्था	हाथापाई
निहत्था	हथकंडा	हथियार	हथकरघा

3. इस गीत के जिन शब्दों में नुक्ता लगा है, उन्हें छाँट कर लिखो। जो शब्द तुम्हारे लिए कुछ नए हैं, उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

4. 'कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना।'

इस वाक्य को हम देखें तो साहिर लुधियानवी इसमें यह कहना चाह रहे हैं– (तुमने) कल गैरों की खातिर (मेहनत) की, आज अपनी खातिर करना।

इस वाक्य में 'तुम' कर्ता है, जो गीत की पंक्ति में छंद बनाए रखने के लिए हटा दिया गया है। उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द 'अपनी' का प्रयोग कर्ता 'तुम' के

7. ऐसे–ऐसे

पात्र–परिचय

मोहन	:	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	:	एक पड़ोसी
माँ	:	मोहन की माँ
पिता	:	मोहन के पिता
मास्टर	:	मोहन के मास्टर जी।
		वैद्य जी डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन।

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ़्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाज़ा सड़क वाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में। अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं। एक ओर रेडियो का सेट है। दो ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं। बीच में कुरसियाँ हैं। एक छोटी मेज़ भी है। उस पर फ़ोन

रखा है। परदा उठने पर – मोहन एक तख्त पर लेटा है। आठ–नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी। तीसरी क्लास में पढ़ता है। इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है। बार–बार पेट को पकड़ता है। उसके माता–पिता बैठे हैं।)

माँ : (पुचकारकर) न–न, ऐसे मत कर! अभी ठीक हुआ जाता है। अभी डॉक्टर को बुलाया है। ले, तब तक सेंक ले। (चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती है। फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है।) इसने कहीं कुछ अंट–शंट तो नहीं खा लिया?

पिता : कहाँ? कुछ भी नहीं। सिर्फ़ एक केला और एक संतरा खाया था। अरे, यह तो दफ़्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था। बस अड्डे पर आकर यकायक बोला–पिता जी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे–ऐसे' हो रहा है।

माँ : कैसे?

पिता : बस 'ऐसे–ऐसे' करता रहा। मैंने कहा–अरे, गड़गड़ होती है? तो बोला–नहीं। फिर पूछा–चाकू–सा चुभता है ? तो जवाब दिया–नहीं। गोला–सा फूटता है, तो बोला–नहीं। जो पूछा उसका जवाब–नहीं। बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे–ऐसे' होता है।

माँ : (हँसकर) हँसी की हँसी, दुख का दुख, यह 'ऐसे–ऐसे' क्या होता है कोई नयी बीमारी तो नहीं ? बेचारे का मुँह कैसे उतर गया है! हवाइयाँ उड़ रही हैं।

पिता : अजी, एकदम सफ़ेद पड़ गया था। खड़ा नहीं रहा गया। बस में भी नाचता रहा– मेरे पेट में 'ऐस–ऐसे' होता है। 'ऐसे–ऐसे' होता है।

मोहन : (ज़ोर से कराहकर) माँ! ओ माँ!

माँ : न–न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं। अजी, ज़रा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं

अया! इसे तो कुछ ज़्यादा ही तकलीफ़ जान पड़ती है। यह 'ऐसे–ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है। देखो न, कैसे लोट रहा है! ज़रा भी कल नहीं पड़ती। हींग, चूरन, पिपरमेंट–सब दे चुकी हूँ। वैद्य जी आ जाते! (तभी फ़ोन की घंटी बजती है। मोहन के पिता उठाते हैं।)

पिता : यह 43332 है। जी, जी हाँ। बोल रहा हूँ... कौन? डॉक्टर साहब! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है... जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं.... बस यही कह रहा है... बस जी.... नहीं, गिरा भी नहीं... 'ऐसे–ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे–ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे–ऐसे!' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता।... जी...जी हाँ! चेहरा एकदम सफ़ेद हो रहा है। नाचा...नाचता फिरता है... जी नहीं, दस्त तो नहीं आया... जी हाँ, पेशाब तो आया था... जी नहीं, रंग तो नहीं देखा। आप कहें तो अब देख लेंगे... अच्छा जी! ज़रा जल्दी आइए। अच्छा जी, बड़ी कृपा है। (फ़ोन का चोंगा रख देते हैं।) डॉक्टर साहब चल दिए हैं। पाँच मिनट में आ जाते हैं।

(पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश। मोहन ज़ोर से कराहता है।)

मोहन : माँ....माँ.... ओ....ओ... (उलटी आती है। उठकर नीचे झुकता है। माँ सिर पकड़ती है। मोहन तीन–चार बार 'ओ–ओ' करता है। थूकता है, फिर लेट जाता है।) हाय, हाय!

माँ : (कमर सहलाती हुई) क्या हो गया ? दोपहर को भला–चंगा गया था। कुछ

समझ में नहीं आता! कैसा पड़ा है! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है। इसे छेड़, उसे पछाड़; इसके मुक्का, उसके थप्पड़। यहाँ–वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।

पिता : बड़ा नटखट है।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा!

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ़ है, तभी तो पड़ा। मामूली तकलीफ़ को तो यह कुछ समझता नहीं। पर कोई डर नहीं। मैं वैद्य जी से कह आया हूँ। वे आ ही रहे हैं। ठीक कर देंगे।

मोहन : (तेज़ी से कराहकर) अरे....रे–रे–रे.... ओह!

माँ : (घबराकर) क्या है, बेटा ? क्या हुआ ?

मोहन : (रुआँसा–सा) बडे ज़ोर से ऐसे–ऐसे होता है। ऐसे–ऐसे।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे ? ऐसे क्या होता है ?

मोहन : ऐसे–ऐसे। (पेट दबाता है।)

(वैद्य जी का प्रवेश)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन ? मैंने कहा, जय रामजी की! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या? कोई धमा–चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या ?

(सब उठकर हाथ जोड़ते हैं। वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं।)

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था। दफ़्तर चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला–मेरे पेट में दर्द होता है। 'ऐसे–ऐसे' होता है। समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है!

वैद्य जी: अभी बता देता हूँ। असल में बच्चा है। समझा नहीं पाता है। (नाड़ी दबाकर) वात का प्रकोप है.... मैंने कहा, बेटा, जीभ तो दिखाओ। (मोहन जीभ निकालता है।) कब्ज़ है। पेट साफ नहीं हुआ। (पेट टटोलकर) हूँ, पेट साफ़ नहीं है। मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है। क्यों बेटा ? (हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं।) ऐसे–ऐसे होता है ?

मोहन : (कराहकर) जी हाँ.... ओह!

वैद्य जी : (हर्श से उछलकर) मैंने कहा न, मैं। समझ गया। अभी पुड़िया भेजता हूँ। मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी–कभी बड़ों–बड़ो को छका देती है। समझने की बात है। मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो। (मोहन की माँ से) आधे–आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है। दो–तीन दस्त होंगे। बस फिर 'ऐसे–ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग! (वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं। मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट। (नोट देते हैं।)

वैद्य जी : (नोट लेते हैं।) अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं? आप और हम क्या दो हैं ?

(अंदर के दरवाज़े से जाते हैं। तभी डॉक्टर प्रवे ा करते हैं।)

डॉक्टर : हैलो मोहन! क्या बात है ? 'ऐसे–ऐसे' क्या कर लिया ?

(माँ और पिता जी फिर उठते हैं। मोहन कराहता है। डॉक्टर पास बैठते हैं।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता।

डॉक्टर : (पेट दबाने लगते हैं।) अभी देखता हूँ। जीभ तो दिखाओ बेटा। (मोहन जीभ निकालता है।) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है ? ऐसे–ऐसे?

(मोहन बोलता नहीं, कराहता है।)

माँ : बताओ, बेटा! डॉक्टर साहब को समझा दो।

मोहन : जी...जी... ऐसे–ऐसे। कुछ ऐसे–ऐसे होता है। (हाथ से बताता है। उँगलियाँ भींचता है।) डॉक्टर, तबीयत तो बड़ी खराब है।

डॉक्टर : (सहसा गंभीर होकर) वह तो मैं देख रहा हूँ। चेहरा बताता है, इसे काफ़ी दर्द है। असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं। कौलिक पेन तो है नहीं। और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता।

(बराबर पेट टटोलता रहता है।)

माँ : (काँपकर) फोड़ा!

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है। बिलकुल नहीं है। (मोहन से) ज़रा मुँह फिर खोलना। जीभ निकालो। (मोहन जीभ निकालत है।) हाँ, कब्ज़ ही लगता है। कुछ बदहज़मी भी है। (उठते हुए) कोई बात नहीं। दवा भेजता हूँ। (पिता से) क्यों न आप ही चलें! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी। कभी–कभी हवा रुक जाती है और फंदा डाल लेती है। बस उसी क ऐंठन है।

(डॉक्टर जाते हैं। मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे–पीछे जाते हैं और डॉक्टर साहब को देते हैं।)

माँ : सेंक तो दूँ, डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : (दूर से) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए।

(डॉक्टर जाते हैं। माँ बोतल उठाती है। पड़ोसिन आती है।)

पड़ोसिन : क्यो मोहन की माँ कैसा है मोहन ?

माँ : आओ जी, रामू की काकी! कैसा क्या होता! लोचा–लोचा फिरे है। जाने वह 'ऐसे–ऐसे' दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया।

पड़ोसिन : ना जी, इत्ती नयी–नयी बीमारियाँ निकली हैं। देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा। राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया। नए–नए बुखार निकल आए हैं। वह बात है कि खाना–पीना तो रहा नहीं।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है। आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर गया था। वहाँ भी कुछ नहीं खाया। आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है।

(बाहर से आवाज़ आती है – 'मोहन! मोहन!'। फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है।)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं। (पुकारकर) आ जाइए!

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे–ऐसे' हो रहा है! क्यों, भाई ? (पास आकर) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है। दादा, कल तो स्कूल जाना है। तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी। क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे ?

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है। समझ गया, उसी में 'ऐसे–ऐसे' होता है।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे।

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है। इसकी 'ऐसे–ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ। अक्सर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है।

माँ : सच! क्या बीमारी है यह ?

मास्टर : अभी बताता हूँ। (मोहन से) अच्छा साहब! दर्द तो दूर हो ही जाएगा। डरो मत। बेशक कल स्कूल मत आना। पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है ? (मोहन चुप रहता है।)

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं।

मास्टर : हाँ, बोलो, बेटा। (मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है। फिर इनकार में सिर

हिलाता है।)

मोहन : जी, सब नहीं हुआ।

मास्टर : हूँ! शायद सवाल रह गए हैं।

मोहन : जी!

मास्टर : तो यह बात है। 'ऐसे–ऐसे' काम न करने का डर है।

माँ : (चौंककर) क्या ?

(मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है।)

मास्टर : (हँसकर) कुछ नहीं, माता जी, मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज खयाल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे–ऐसे' होने लगा – 'ऐसे–ऐसे'! अच्छा, उठिए साहब! आपके 'ऐसे–ऐसे' की दवा मेरे पास है। स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी। आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे–ऐसे' दूर भाग जएगा। (मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है।) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा। (मोहन उठता है। माँ ठगी–सी देखती है। द्वार से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है। हमारी तो जान निकल गई। पंद्रह–बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग। (पिता से) देखा जी आपने!

पिता : (चकित होकर) क्या–क्या हुआ ?

माँ : क्या–क्या होता! यह 'ऐसे–ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है।

पिता : हें!

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फ़र्श पर गिर पड़ती है। एक क्षण सब ठगे–से मोहन को देखते हैं। फिर हँस पड़ते हैं।)

दीनानाथ : वाह, मोहन वाह!

पिता : वाह, बेटा जी, वाह! तुम ने तो खूब छकाया! (एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है।)

– विष्णु प्रभाकर

प्रश्न–अभ्यास

एकांकी से

1. 'सड़क के किनारे एक सुदर फ्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाज़ा सड़क वाले बरामदे में खुलता है ..... उस पर एक फ़ोन रखा है।'

   इस बैठक की पूरी तस्वीर बनाओ।
2. माँ मोहन के 'ऐसे–ऐसे' कहने पर क्यों घबरा रही थी ?
3. ऐसे कौन–कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं ? ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखो।

अनुमान और कल्पना

1. जब तुम्हारी तबीयत खराब होती है तो तुम्हारे घरवालों का व्यवहार तुम्हारे प्रति कैसा रहता है ? इसे शिक्षक को बताओ ?
2. मान लो कि तुम मोहन की तबीयत पूछने जाते हो। तुम अपने और मोहन के बीच की बातचीत को संवाद के रूप में लिखो।
3. 'नाटक' शब्द का आम ज़िंदगी में कब–कब इस्तेमाल किया जाता हैं ? सोच कर लिखो।
4. संकट के समय के लिए कौन–कौन से नंबर याद रखे जाने चाहिए। पुलिस, फ़ायर ब्रिगेड और डॉक्टर से तुम कैसे बात करोगे ?

भाषा की बात

1. (क) मोहन ने केला और संतरा खाया।

   (ख) मोहन ने केला और संतरा नहीं खाया।

(ग) मोहन ने क्या खाया ?

(घ) मोहन केला और संतरा खाओ।

उपर्युक्त वाक्यों में से पहला वाक्य एकांकी से लिया गया है। बाकी तीन वाक्य देखने में पहले वाक्य से मिलते–जुलते हैं, पर उनके अर्थ अलग–अलग हैं। पहला वाक्य किसी कार्य या बात के होने के बारे में बताता है। इसे विधिवाचक वाक्य कहते हैं। दूसरे वाक्य का संबंध उस कार्य के न होने से है, इसलिए उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। (निषेध का अर्थ नहीं या मनाही होता है।) तीसरे वाक्य में इसी बात को प्रश्न के रूप में पूछा जा रहा है, ऐसे वाक्य प्रश्नवाचक कहलाते हैं। चौथे वाक्य में मोहन से उसी कार्य को करने के लिए कहा जा रहा है। इसलिए उसे आदेशवाचक वाक्य कहते हैं। अगले पृष्ठ पर एक वाक्य दिया गया है। इसके बाकी तीन रूप तुम सोचकर लिखो –

बताना	:	रुथ ने कपड़े अलमारी में रखे।
नहीं / मना करना	:	.....
पूछना	:	.....
अदेश देना	:	.....

ध्यान देने योग्य शब्द

गलीचा	–	सूत या ऊन के धागे से बुना हुआ कालीन।
अंट–शंट	–	फ़ालतू चीज़ें
गड़–गड़	–	गरजने की आवाज़
कल	–	चैन
बला	–	कष्ट
भला–चंगा	–	स्वस्थ, तंदरुस्त, अच्छा–खासा

देखकर खुश होते।

और तो और कक्षा की लड़कियाँ भी उस अलबम को देखने के लिए उत्सुक थीं। पार्वती लड़कियों की अगुवा बनी और अलबम माँगने आई। लड़कियों में वही तेज़–तर्रार मानी जाती थी। नागराजन ने कवर चढ़ाकर अलबम उसे दिया। शाम तक लड़कियाँ अलबम देखती रहीं फिर उसे वापस कर दिया।

अब राजप्पा के अलबम को कोई पूछने वाला नहीं था। वाकई उसकी शान अब घट गई थी। राजप्पा के अलबम की, लड़कों में काफ़ी तारीफ़ रही थी। मधुमक्खी की तरह उसने एक–एक करके टिकट जमा किए थे। उसे तो बस एक यही धुन सवार थी। सुबह आठ बजे वह घर से निकल पड़ता। टिकट जमा करने वाले सारे लड़कों के चक्कर लगाता। दो ऑस्ट्रेलिया के टिकटों के बदले एक फिनलैंड का टिकट लेता।

दो पाकिस्तान के बदले एक रूस का। बस शाम, जैसे ही घर लौटता, बस्ता कोने में पटककर अम्मा से चबेना लेकर निकर की जेब में भर लेता और खड़े–खड़े कॉफी पीकर निकल जाता। चार मील दूर अपने दोस्त के घर से कनाडा का टिकट लेने

पगडंडियों में होकर भागता। स्कूल भर में उसका अलबम सबसे बड़ा था। सरपंच के लड़के ने उसके अलबम को पच्चीस रुपए में खरीदना चाहा था, पर राजप्पा नहीं माना। 'घमंडी कहीं का', राजप्पा बड़बड़ाया था। फिर उसने तीखा जवाब दिया था, "तुम्हारे घर में जो प्यारी बच्ची है न, उसे दे दो न तीस रुपए में।" सारे लड़के ठहाका मारकर हँस पड़े थे।

पर अब? कोई उसके अलबम की बात तक नहीं करता। और तो और अब सब उसके अलबम की तुलना नागराजन के अलबम से करने लगे हैं। सब कहते हैं राजप्पा का अलबम फिसड्डी है।

पर राजप्पा ने नागराजन के अलबम को देखने की इच्छा कभी नहीं प्रकट की। लेकिन जब दूसरे लड़के उसे देख रहे होते तो वह नीची आँखों से देख लेता। सचमुच नागराजन का अलबम बेहद प्यारा था। पर राजप्पा के पास जितने टिकट थे उतने नागराजन के अलबम में नहीं थे। पर खुद उसका अलबम ही कितना प्यारा था। उसे छू लेना ही कोई बड़ी बात थी। इस तरह का अलबम यहाँ थोड़ी मिलेगा। अलबम के पहले पृष्ठ पर मोती जैसे अक्षरों में उसके मामा ने लिख भेजा था–

ए.एम. नागराजन

'इस अलबम को चुराने वाला बेशर्म है। ऊपर लिखे नाम को कभी देखा है? यह अलबम मेरा है। जब तक घास हरी है और कमल लाल, सूरज तब तक पूर्व से उगे और पश्चिम में छिपे, उस अनंत काल तक के लिए यह अलबम मेरा है, रहेगा।'

लड़कों ने इसे अपने अलबम में उतार लिया। लड़कियों ने झट कापियों और किताबों में टीप लिया।

"तुम लोग यह नकल क्यों करते हो ? नकलची कहीं के", राजप्पा ने लड़कों को घुड़की दी। सब चुप रहे पर कृष्णन से नहीं रहा गया।

"जा, जा। जलता है, ईर्ष्यालू कहीं का।"

"मैं काहे को जलूँ? जले तेरा खानदान। मेरा अलबम उसके अलबम से कहीं बड़ा है।" राजप्प ने शान बघारी।

"अरे, उसके पास जो टिकटें हैं, वह है कहीं तेरे पास ? सब क्यों? बस एक इंडोनेशिया का टिकट दिखा दो। अरे, पानी भरोगे, हाँ।" कृष्णन ने छेड़ा।

"पर मेरे पास जो टिकट है, वह कहाँ है उसके पास?" राजप्पा ने फिर ललकारा।

"उसके पास जो टिकट है वही दिखा दो।" कृष्णन भी कम नहीं था।

"ठीक है, दस रुपए की शर्त। मेरे वाले टिकट दिखा दो।"

"तुम्हारा अलबम कूड़ा है" "कृष्णन चीखा, "हाँ, हाँ कूड़ा।"

लड़के जैसे कोरस गाने लगे।

राजप्पा को लगा, अपने अलबम के बारे में बातें करना फ़ालतू है। उसने कितनी मेहनत और लगन से टिकट बटोरे हैं। सिंगापुर से आए इस एक पार्सल ने नागराजन को एक ही दिन में मशहूर कर दिया। पर दोनों में कितना अंतर है! ये लड़के क्या समझेंगे ?

राजप्पा मन–ही–मन कुढ़ रहा था। स्कूल जाना अब खलने लगा था और लड़कों के सामने जाने में शर्म आने लगी। आम तौर पर शनिवार और रविवार को टिकट की खोज में लगा रहता, परंतु अब घर–घुसा हो गया था। दिन में कई बार अलबम को पलटता रहता। रात को लेट जाता। सहसा जाने क्या सोचकर उठता, ट्रंक खोलकर अलबम निकालता और एक बार पूरा देख जाता। उसे अलबम से चिढ़ होने लगी थी। उसे लगा, अलबम वाकई कूड़ा हो गया है।

उस दिन शाम उसने जैसे तय कर लिया था, वह नागराजन के घर गया। अब कोई कितना अपमान सहे! नागराजन के हाथ अचानक एक अलबम लगा है, बस यही ना। वह क्या जाने टिकट कैसे जमा किए जाते हैं! एक–एक टिकट की क्या कीमत होती है वह भला क्या समझे! सोचता होगा टिकट जितना बड़ा होगा, वह उतना ही

कीमती होगा। या फिर सोचता होगा, बड़े देश का टिकट कीमती होगा। वह भला क्या समझे!

उसके पास जितने भी फ़ालतू टिकट हैं उन्हें टरका कर, उससे अच्छे टिकट झाड़ लेगा। कितनों को तो उसने यूँ ही उल्लू बनाया है। कितनी चालबाज़ी करनी पड़ती है। नागराजन भला किस खेत की मूली है ?

राजप्पा नागराजन के घर पहुँचकर ऊपर गया। चूँकि वह अक्सर आया–जाया करता था, सो किसी ने नहीं टोका। ऊपर पहुँचकर वह नागराजन की मेज़ के पास पड़ी कुरसी पर बैठ गया। कुछ देर बाद नागराजन की बहन कामाक्षी ऊपर आई।

"भैया शहर गया है। अरे हाँ, तुमने भैया का अलबम देखा?" उसने पूछा।

"हूँ", राजप्पा को हाँ कहने में हेकड़ी हो रही थी।

"बहुत सुंदर अलबम है ना? सुना है स्कूल भर में किसी के भी पास इतना बड़ा अलबम नहीं है।"

"तुमसे किसने कहा?"

"भैया ने।"

वह कुढ़ गया।

"बड़े से क्या मतलब हुआ ? आकार में बड़ा हुआ तो अलबम बड़ा हो गया?" उसकी चिड़चिड़ाहट साफ़ थी।

कामाक्षी कुछ देर तक वहीं रही। फिर नीचे चली गई। राजप्पा मेज़ पर बिखरी किताबों को टटोलने लगा। अचानक उसका हाथ दराज़ के ताले से टकरा गया। उसने ताले को खींचकर देखा। बंद था, क्यों न उसे खोलकर देख लिया जाए। मेज़ पर से उसने चाबी ढूँढ़ निकाली।

सीढ़ियों के पास जाकर उसने एक बार झाँककर देखा। फिर जल्दी में दराज़

खोली। अलबम ऊपर ही रखा हुआ था। पहला पृष्ठ खोला। उन वाक्यों को उसने दोबारा पढ़ा। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। अलबम को झट कमीज़ के नीचे खोंस लिया और दराज़ बंद कर दिया। सीढ़ियाँ उतर कर घर की ओर भागा।

घर जाकर सीधा पुस्तक की अलमारी के पास गया और पीछे की ओर अलबम छिपा दिया। उसने बाहर आकर झाँका। पूरा शरीर जैसे जलने लगा था। गला सूख रहा था और चेहरा तमतमाने लगा था।

रात आठ बजे अपू आया। हाथ–पाँव हिलाकर उसने पूरी बात कह सुनाई।

"सुना तुमने, नागराजन का अलबम खो गया। हम दोनों शहर गए हुए थे लौटकर देखा तो अलबम गायब!"

राजप्पा चुप रहा। उसने अपू को किसी तरह टाला। उसके जाते ही उसने झट कमरे का दरवाज़ा भेड़ लिया और अलमारी के पीछे से अलबम निकालकर देखा। उसे फिर छिपा दिया। डर था कहीं कोई देख न ले।

रात में खाना नहीं खाया। पेट जैसे भरा हुआ था। सारा घर चिंतित हो गया। उसका चेहरा भयानक हो गया था।

रात, उसने सोने की कोशिश की पर नींद नहीं आई। अलबम सिरहाने तकिए के नीचे रखकर सो गया।

सुबह अपू दोबारा आया। राजप्पा तब भी बिस्तर पर बैठा था। अपू सुबह नागराजन के घर होकर आया था। "कल तुम उसके घर गए थे?" अपू ने पूछा। राजप्पा की साँस जैसे ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। फिर सिर हिला दिया। वह जिस तरह चाहे सोच ले।

"कामाक्षी ने कहा था कि हमारे जाने के बाद खाली तुम वहाँ आए थे।" अपू बोला। राजप्पा को समझते देर नहीं लगी कि अब सब उस पर शक करने लगे हैं।

"कल रात से नागराजन लगातार रोए जा रहा है। उसके पापा शायद पुलिस को खबर दें।" अपू ने फिर कहा।

राजप्पा फिर भी चुप रहा।

"उसके पापा डी. एस.पी के दफ़्तर में ही तो काम करते हैं बस वह पलक झपक दें और पुलिस की फ़ौज हाज़िर।" अपू जैसे आग में घी डाल रहा था।

यह तो भला हुआ कि अपू का भाई उसे ढूँढ़ता हुआ आ गया और अपू चलता बना।

राजप्पा के पापा दफ़्तर चले गए थे। बाहर का किवाड़ बंद था। राजप्पा अब तक बिस्तर पर बैठा हुआ था। आधा घंटा गुज़र गया और वह उसी तरह बैठा रहा।

तभी बाहर की साँकल खटकी।

'पुलिस', राजप्पा बुदबुदाया।

भीतर साँकल लगी थी। दरवाज़ा खटकने की आवाज़ तेज़ हो गई। राजप्पा ने तकिए के नीचे से अलबम उठाया और ऊपर भागा। अलमारी के पीछे छिपा दे? नहीं। पुलिस ने अगर तलाशी ली तो पकड़ा जाएगा। अलबम को कमीज़ के नीचे छिपाकर वह नीचे आ गया। बाहर का दरवाज़ा अब भी बज रहा था।

"कौन है? अरे दरवाज़ा क्यों नहीं खोलता?" अम्मा भीतर से चिल्लाईं। थोड़ी देर और हुई तो अम्मा खुद ही उठकर चली आएँगी।

राजप्पा पिछवाड़े की ओर भागा। जल्दी से बाथरूम में घुसकर दरवाज़ा बंद कर लिया। अम्मा ने अँगीठी पर गरम पानी की देगची चढ़ा रखी थी। उसने अलबम को अँगीठी में डाल दिया। अलबम जलने लगा। कितने प्यारे टिकट थे। राजप्पा की आँखों में आँसू आ गए।

तभी अम्मा की आवाज़ आई, "जल्दी से आ तो नहाकर। नागराजन तुझे ढूँढ़ता हुआ आया है।" राजप्पा ने निकर उतार दी और गीला तौलिया लपेटकर बाहर आ गया। कपड़े बदलकर वह ऊपर गया। नागराजन कुरसी पर बैठा हुआ था। उसे देखते ही बोला, "मेरा अलबम खो गया है यार।" उसका चेहरा उतरा हुआ था। काफ़ी रोकर आया था शायद।

प्रश्न–अभ्यास

कहानी से

1. अलबम पर किसने और क्यों लिखा ? इसका असर क्लास के दूसरे लड़के–लड़कियों पर क्या हुआ ?
2. नागराजन के अलबम के हिट हो जाने के बाद राजप्पा के मन की क्या दशा हुई ?
3. अलबम चुराते समय राजप्पा किस मानसिक स्थिति से गुज़र रहा था ?
4. राजप्पा ने नागराजन का टिकट–अलबम अँगीठी में क्यों डाल दिया ?
5. लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्खी से क्यों की ?

कहानी से आगे

1. टिकटों की तरह ही बच्चे और बड़े दूसरी चीज़ें भी जमा करते हैं। सिक्के उनमें से एक हैं। क्या तुम कुछ अन्य चीज़ों के बारे में सोच सकते हो जिन्हें जमा किया जा सकता है ? उनके नाम लिखो।
2. टिकट–अलबम का शौक रखने के राजप्पा और नागराजन के तरीके में क्या फ़र्क है? तुम अपने शौक के लिए कौन–सा तरीका अपनाओगे ?
3. इकट्ठा किए हुए टिकटों का अलग–अलग तरह से वर्गीकरण किया जा सकता है। जैसे, देश के आधार पर। ऐसे और आधार सोचकर लिखो।
4. कई लोग चीज़ें इकट्ठा कर 'गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में अपना नाम दर्ज करवाते हैं। इसके पीछे उनकी क्या प्रेरणा होती होगी ? सोचो और अपने दोस्तों से इस पर बातचीत करो।

अनुमान और कल्पना

1. राजप्पा अलबम के जलाए जाने की बात नागराजन को क्यों नहीं कह पाता है ? अगर वह कह देता तो क्या कहानी के अंत पर कुछ फ़र्क पड़ता ? कैसे ?
2. 'ऑस्ट्रेलिया के दो टिकटों के बदले फिनलैंड का एक टिकट लेता। दो पाकिस्तान के बदले एक रूस का।' वह ऐसा क्यों करता था?
3. कक्षा के बाकी विद्यार्थी स्वयं अलबम क्यों नहीं बनाते थे ? वह राजप्पा और नागराजन के अलबम के दर्शक मात्र क्यों रह जाते हैं ? अपने शिक्षक को बताओ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को कहानी में ढूँढ़कर उनका अर्थ समझो। अब स्वयं सोचकर इनसे वाक्य बनाओ –

खोंसना	जमघट	टटोलना	कुढ़ना
अगुआ	पुचकारना	खलना	हेकड़ी

2. कहानी से व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए प्रयुक्त हुए 'नहीं' अर्थ देने वाले शब्दों (नकारात्मक विशेषण) को छाँटकर लिखो। उनक उल्टा अर्थ देने वाले शब्द भी लिखो।

कुछ करने को

1. मान लो कि स्कूल में तुम्हारी कोई प्रिय चीज़ खो गई है। तुम चाहते हो कि जिसे वह चीज़ मिले वह तुम्हें लौटा दे। इस संबंध में स्कूल के बोर्ड पर लगाने के लिए एक नोटिस तैयार करो जिसमें निम्नलिखित बिंदु हों –
   (क) खोई हुई चीज़ का वर्णन
   (ख) कहाँ खोई

9. मैं सबसे छोटी होऊँ

मैं सबसे छोटी होऊँ,
तेरी गोदी में सोऊँ,
तेरा अंचल पकड़–पकड़कर
फिरूँ सदा माँ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ!
बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात!
हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन–रात!
अपने कर से खिला, धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,
थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात!
ऐसी बड़ी न होऊँ मैं
तेरा स्नेह न खोऊँ मैं,
तेरे अंचल की छाया में
छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय,
कहूँ–दिखा दे चंद्रोदय!

सुमित्रानंदन पंत

बनाओ –

छोड़	–	बना	–
फिर	–	खिला	–
पोंछ	–	थमा	–
सुना	–	कह	–
दिखा	–	छिपा	–

2. इन शब्दों के समान अर्थ वाले दो–दो शब्द लिखो –

हाथ	–
सदा	–
मुख	–
माता	–
स्नेह	–

3. कविता में 'दिन–रात' शब्द आया है। तुम भी ऐसे पाँच शब्द सोचकर लिखो जिनमें किसी शब्द का विलोम शब्द भी शामिल हो और उनके वाक्य बनाओ।

4. 'निर्भय' शब्द में 'नि' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाया गया है। तुम भी 'नि' उपसर्ग से पाँच शब्द बनाओ।

5. कविता की किन्हीं चार पंक्तियों को गद्य में लिखो।

ध्यान देने योग्य शब्द

अंचल	–	वस्त्र का छोर, साड़ी, ओढ़नी आदि का वह छोर जो छाती और पेट पर रहता है
गात	–	शरीर
निस्पृह	–	इच्छा रहित
निर्भय	–	निडर

10. लोकगीत

लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाए जाते हैं। सदा से ये गाए जाते रहे हैं और इनके रचने वाले भी अधिकतर गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो

लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक–साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित भी हो गए हैं।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तोबड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्य प्रदेश, दकन, छोटा नागपुर में गोंड–खांड, ओराँव–मुंडा, भील–संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन नियमों की

साधारणतः पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। कहरवा, बिरहा, धोबिया आदि देहात में बहुत गए जाते हैं और बड़ी भीड़ आकर्षित करते हैं।

इनकी भाषा के संबंध में कहा जा चुका है कि ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाए जाते हैं। इसी कारण ये बड़े आह्लादकर और आनंददायक होते हैं। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में करीब तीस–चालीस बरसों से 'बिदेसिया' का प्रचार हुआ है। गाने वालों के अनेक समूह इन्हें गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के ज़िलों में विशेषकर बिहार में बिदेसिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं हैं। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और इनसे करुणा और विरह का रस बरसता है।

जंगल की जातियों आदि के भी दल–गीत होते हैं जो अधिकतर बिरहा आदि में गाए जाते हैं। पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर एक–दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर गाते हैं और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

एक दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने आल्हा के हैं। अधिकतर ये बुंदेलखंडी में गाए जाते हैं। आरंभ तो इसका चंदेल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है जिसने आल्हा–ऊदल की वीरता का अपने महाकाव्य में बखान किया, पर निश्चय ही उसके छंद को लेकर जनबोली में उसके विषय को दूसर देहाती कवियों ने भी समय–समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाए जाते हैं। इन्हें गाने वाले गाँव–गाँव ढोलक लिए गाते फिरते हैं। इसी की सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य–पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं।

नहीं होता, फिर भी त्योहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ भी होती हैं जो विवाह जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बाँधकर गाती हैं। पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज़ है, जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल–कोकिल विद्यापति के गीत गाए जाते हैं। पर सारे देश के – कश्मीर से कन्या कुमारी–केरल तक और काठियावाड़–गुजरात–राजस्थान से उड़ीसा–आंध्र तक – अपने–अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है जिसे विशेष विधि से घेरे में घूम–घूमकर औरतें गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती जाती हैं जो बाजे का काम करती हैं। इसमें नाच–गान साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। सभी प्रांतों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसार पर ब्रज में रसिया चलत है जिसे दल के दल लोग गाते हैं, स्त्रियाँ विशेष तौर पर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला–इठलाकर लहराता है वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है ? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने प्रतीक हैं।

– भगवतशरण उपाध्याय

प्रश्न–अभ्यास

निबंध से

1. निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गई है ? बिंदुओं के रूप में उन्हें लिखो।
2. हमारे यहाँ स्त्रियों के खास गीत कौन–कौन से हैं ?
3. निबंध के आधार पर और अपने अनुभव के आधार पर (यदि तुम्हें लोकगीत सुनने के मौके मिले हैं तो) तुम लोकगीतों की कौन–सी विशेषताएँ बता सकते हो ?
4. 'पर सारे देश के.... अपने–अपने विद्यापति हैं' इस वाक्य का क्या अर्थ है ? पाठ पढ़कर मालूम करो और लिखो।

अनुमान और कल्पना

1.क्या लोकगीत और नृत्य सिर्फ़ गाँवों या कबीलों में ही पाए जाते हैं ? शहरों के कौन से लोकगीत हो सकते हैं ? इस पर विचार कर लिखो।
2. 'जीवन जहाँ इठला–इठला कर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है ? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने प्रतीक हैं।' क्या तुम इस बात से सहमत हो ? 'बिदेसिया' नामक लोकगीत से कोई कैसे आनंद प्राप्त कर सकता है और वे कौन लोग हो सकते हैं जो इसे गाते–सुनते हैं ? इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर अपने शिक्षक को सुनाओ।

कुछ करने को

1. तुम अपने इलाके के कुछ लोकगीत इकट्ठा करो। गाए जाने वाले मौकों के अनुसार उनका वर्गीकरण करो।
2. जैसे–जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या

असर पड़ रहा है? अपने आसपास के लोगों से बातचीत करके और अपने अनुभवों के आधार पर एक अनुच्छेद लिखो।

भारत के मानचित्र में

– भारत के नक्शे में पाठ में चर्चित राज्यों के लोकगीत और नृत्य दिखाओ।

भाषा की बात

1. 'लोक' शब्द में कुछ जोड़कर जितने शब्द तुम्हें सूझें, उनकी सूची बनाओ। इन शब्दों को ध्यान से देखो और समझो कि उनमें अर्थ की दृष्टि से क्या समानता है। इन शब्दों से वाक्य भी बनाओ। जैसे–लोककला।
2. 'बारहमासा' गीत में साल के बारह महीनों का वर्णन होता है। नीचे विभिन्न अंकों से जुड़े कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़ो और अनुमान लगाओ कि इनका क्या अर्थ है और वह अर्थ क्यों है। इस सूची में तुम अपने मन से सोचकर भी कुछ शब्द जोड़ सकते हो –

इकतार	सरपंच	चारपाई	सप्तर्षि	अठन्नी
तिराहा	दोपहर	छमाही	नवरात्र	

3. को, में, से आदि वाक्य में संज्ञा का दूसरे शब्दों के साथ संबंध दर्शाते हैं। पिछले पाठ (झाँसी की रानी) में तुमने का के बारे में जाना। नीचे 'मंजरी जोशी' की पुस्तक 'भारतीय संगीत की परंपरा' से भारत के एक लोकवाद्य का वर्णन दिया गया है। इसे पढ़ो और रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो–

तुरही भारत के कई प्रांतों में प्रचलित है। यह दिखने.... अंग्रेज़ी के एस या सी अक्षर ..... तरह होती है। भारत ..... विभिन्न प्रांतों में पीतल या काँसे ..... बना यह वाद्य अलग–अलग नामों.....जाना जाता है। धातु की नली.....घुमाकर एस.....आकार

प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1. हमें अपने देश पर अभिमान है, क्योंकि :

   (क) भारत एक विशाल देश है।

   (ख) भारत को उपमहाद्वीप कहा जाता है।

   (ग) भारत एक धनवान देश है।

   (घ) भारत की प्रकृति और संस्कृति निराली है।

2. भारत को महान बनाने में 'सागर', 'गंगा' और 'हिमालय' का क्या योगदान है ?

3. कविता की किन पंक्तियों का आशय है :

   "भारतभूमि का कण–कण वर्षा और धूप से खिल उठता है।"

4. "लगा हुआ है आदि काल से ज्ञान–किरण का बाण देश का", कोई एक उदाहरण देकर समझाएँ कि हमारे देश के लोग आदिकाल से ही ज्ञान के क्षेत्र में आगे रहे हैं।

5. देश को 'कोटि बाहु' और 'कोटि प्राण' क्यों कहा गया है ?

6. भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) ज्ञान–किरण का बाण देश का।

   (ख) झुक–झुक नभ करता पद–वंदन।

योग्यता–विस्तार

1. इस कविता को प्रभावशाली ढंग से पढ़कर कक्षा में सुनाएँ।

2. राष्ट्रीय भावधारा की दस–दस कविताओं का संकलन करके समस्त कक्षा की ओर से एक 'राष्ट्रीय–काव्य कुंज' नाम का काव्य–संकलन तैयार करें।

12. सेनापति ताँत्या टोपे

18 अप्रैल, 1859 ई०। आगरा–बंबई मार्ग पर ग्वालियर से 100 कि०मी० दक्षिण में शिवपुरी के आसपास ग्रामीणों की भीड़ गुमसुम पहाड़ियों पर बढ़ती जा रही थी, ठीक उसी तरह जैसे सूरज आसमान पर चढ़ता जा रहा था। गरम लू के थपेड़े सवेरे से ही मौसम को तपा रहे थे, फिर भी हज़ारों की संख्या में गोरी पलटन के सिपाही सारे इलाके में टिड्डी दल की भांति फैले हुए थे।

भारी पहरे के बीच भय–त्रस्त अंग्रेज़ अधिकारी न्याय के खूनी नाटक का पर्दा उठा रहे थे। चाटुकार तथा गद्दार पीछे–पीछे दुम हिलाते हुए इस जघन्य कृत्य में उनका साथ दे रहे थे।

विशाल वृक्ष के नीचे काला भीमकाय जल्लाद खड़ा था। मोटी डाल पर फाँसी का फंदा झूल रहा था। सारा मैदान सैनिकों से तथा आसपास की पहाड़ियाँ जनसमुदाय से भरी थीं। चुपचाप साँस रोके हुए विशाल जनसमूह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का सूर्यास्त देख रहा था।

एक क़ैदी बेड़ी और हथकड़ियों में जकड़ा हुआ फाँसी के पास लाया गया। गोरे सैनिकों के शस्त्रों के घेरे में वह मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ फाँसी के तख़्ते के निकट आ पहुँचा। भारी–भरकम बेड़ियों की आवाज़ से सारा मैदान दहलने लगा। दो लुहारों ने आकर उसकी बेड़ियाँ काटीं। ठिगने कद के इस गठीले क़ैदी ने हाथ ऊपर उठाकर उपस्थित जन–समुदाय का अभिवादन किया। फाँसी के तख़्ते पर पहला कदम रखने से पूर्व वह झुका। धरती माँ की पवित्र माटी से अपने माथे पर तिलक लगाया। इस समय कई गोरे निशानेबाज़ सिपाही इस.कैदी की ओर बंदूकों का निशाना साधे सावधान खड़े थे उन्हें आदेश था, "यदि क़ैदी भागने की चेष्टा करे तो फ़ौरन

गोली मार दो।" ताँत्या टोपे ने हँसते हुए अपने हाथ से फाँसी का फंदा गले में डाला। वह मौत के कुएँ में झूल गया। इस प्रकार माँ भारत का यह बहादुर सपूत शहीद हो गया – अपने पीछे एक अमर–गाथा छोड़कर ———।

ताँत्या टोपे का पूरा नाम रामचंद्र पांडुरंग टोपे था। इनके पिता पांडुरंग भट्ट, बाजीराव पेशवा द्वितीय के यहाँ बिठूर में नौकरी करते थे। पेशवा निःसंतान थे इसलिए उन्होंने नानाथोडू पंत को गोद लिया था। इस प्रकार नाना और ताँत्या टोपे बाल–सखा थे। नाना साहब, टोपे और मनुबाई तीनों नियमित रूप से अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा लेते थे। मनुबाई ही आगे चलकर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुई। उन्होंने भाला अैर तलवार चलाने तथा घुड़सवारी करने में निपुणता प्राप्त की। टोपे घुड़सवारी में अत्यंत निपुण थे। बाजीराव पेशवा ने नाना साहब और टोपे की एक–एक अंग्रेज घुड़सवार से प्रतियोगिता कराई। घुड़सवारी की प्रतियोगिता में टोपे प्रथम रहा। पेशवा बाजीराव ने टोपे को पुरस्कार के रूप में लोहे का एक टोप प्रदान किया और ताँत्या टोपे के नाम से संबोधित किया। किसे पता था कि लोहे का टोप पहनने वाला वह वीर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का सेनापति बनकर अंत तक अंग्रेज़ों को नाकों चने चबवाता रहेगा।

लार्ड डलहौज़ी ने देशी रियासतों को हड़पने का एक खूबसूरत उपाय सोचा। उसने घोषणा की कि जो राजा निःसंतान हैं वे अपने उत्तराधिकारी के रूप में किसी को गोद नहीं ले सकते और उनका राज्य अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया जाएगा। फलस्वरूप बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब को भी गैर कानूनी करार दिया गया।

बाजीराव पेशवा जब अंग्रेज़ों से हार गए, तो उन्हें अंग्रेज़ों के साथ संधि करनी पड़ी। समझौते के अनुसार अंग्रेज़ों ने उन्हें आठ लाख रुपए की सालाना पेंशन देना तय किया।

सर ह्यूरोज़ एक विशाल सेना लेकर रानी का पीछा करते–करते ग्वालियर पहुँचा। घमासान युद्ध हुआ जिसमें रानी वीरगति को प्राप्त हुई।

ताँत्या टोपे अब अकेले पड़ गए। वे बची–खुची सेना लेकर नागपुर की ओर बढ़े। वे चाहते थे कि नर्मदा नदी के पार दक्षिण भारत के राजाओं से मिलकर अंग्रेज़ों को भारत से निकाल बाहर करने की कोशिश की जाए। अंग्रेज़ सेनापतियों के अवरोधों के बावजूद वे नर्मदा पार करने में सफल हो गए। पर वे जिस उम्मीद और उद्देश्य से दक्षिण भारत गए थे, वे पूरे नहीं हुए। निराश होकर वे लौट आए और मध्य भारत के जंगलों में छिपकर अंग्रेज़ों से छापामार युद्ध करते रहे। इस युद्ध द्वारा उन्होंने अंग्रेज़ी सेना को काफ़ी नुक़सान पहुँचाया। अंग्रेज़ी सेना ताँत्या टोपे के नाम से ही घबरा उठती थी। उन्हें डर रहता था कि न जाने कब और किस ओर से टोपे धावा बोल देंगे और मारकाट करके जंगलों में छिप जाएँगे।

फरवरी 1859 ई० तक ताँत्या टोपे गिरफ़्तार नहीं किए जा सके। वे अंग्रेज़ी फ़ौज़ को नाकों चने चबवाते रहे और सेनापतियों तथा अधिकारियों की नींद हराम करते रहे।

आख़िर अंग्रेज़ों ने अपनी पुरानी चाल चली। उन्होंने ताँत्या में मित्र सरदार मानसिंह को अपनी ओर मिला लिया। एक दिन जब ताँत्या मानसिंह के यहाँ जंगल में छिपे थे, तो मानसिंह ने उन्हें धोखे से पकड़वा दिया। उनके विरुद्ध फ़ौजी अदालत में मुकदमा चलाया गया। 18 अप्रैल 1859 ई० को मध्यप्रदेश के शिवपुरी में फ़ौज के सख़्त पहरे में उन्हें फाँसी दे दी गई। हैवान अंग्रेज़ अफ़सरों ने उनके सिर के बाल नोचकर यादगार के रूप में रख लिए। अंग्रेज़ इतिहासकार मालसन ने लिखा है, "संसार की किसी भी सेना ने कभी कहीं पर इतनी तेज़ी के साथ कूच नहीं किया, जितनी तेज़ी से ताँत्या की सेना कूच करती थी – – – जिस बहादुरी और हिम्मत के साथ ताँत्या ने अपनी योजनाओं को पूरा करने का प्रयत्न किया, उसकी प्रशंसा करना कठिन है।

– विभागीय

प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1. 18 अप्रैल, 1859 ई० को शिवपुरी के आस–पास ग्रामीणों की भीड़ पहाड़ियों पर क्यों बढ़ती जा रही थी ?
   (क) पहाड़ी पर टिड्डी दल की तरह बिखरे गोरी पलटन के हज़ारों सिपाहियों को देखने के लिए।
   (ख) न्याय का नाटक खेलने वाले भयत्रस्त अंग्रेज़ अधिकारियों को देखने के लिए।
   (ग) स्वतंत्रता संग्राम के अजेय योद्धा ताँत्या टोपे के अंतिम दर्शन करने के लिए।
2. 'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सूर्यास्त' से लेखक का क्या तात्पर्य है ?
3. फाँसी के तख्ते पर पहला कदम रखते ही वीर ताँत्या टोपे ने सबसे पहले क्या काम किया अैर क्यों ?
4. "इस पर माँ भारती का यह बहादुर सपूत शहीद हो गया– अपने पीछे एक अमर गाथा छोड़कर–" कौन–सी अमर गाथा छोड़कर उस अमर गाथा को भावपूर्ण शब्दों में सुनाएँ।
5. किन घटनाओं से सिद्ध होता है कि ताँत्या टोपे एक वीर, कुशल और स्वामिभक्त सेनानायक थे?
6. अंग्रेज़ों की कौन–सी पुरानी चाल थी, जिसके द्वारा उन्होंने ताँत्या टोपे को बंदी बनाया ?
7. विदेशी इतिहासकार मालसन ने ताँत्या की वीरता की किन शब्दों में प्रशंसा की है ?

13. श्री वैष्णों देवी की यात्रा

वेद और पुराण हमारे प्राचीन धर्म–ग्रंथ हैं। इनमें देवी–देवताओं संबंधी अनेक कहानियाँ मिलती हैं। इनमें मुख्यतः एक ही शक्ति को कई नामों से पुकारा गया है। जैसेः दुर्गा, कात्ययानी, सरस्वती, अंबिका आदि। कुछ पुराणों में इसी शक्ति को वैष्णवी भी कहा गया है।

जम्मू प्रांत में शिवालिक पहाड़ियों का सिलसिला दूर–दूर तक फैला हुआ है। जम्मू शहर से लगभग 45 किलोमीटर उत्तर दिशा में कटड़ा के पास इन पहाड़ियों का एक भाग चित्रकूट कहलाता है। इसी चित्रकूट में वैष्णों देवी की प्रसिद्ध और पवित्र गुफ़ा है। वैष्णो देवी के नाम के साथ प्रायः 'माता' विशेषण भी जोड़ा जाता है। यदि कोई इतना ही कह दे कि वह 'माता' जा रहा है अथवा 'माता' गया था, तो उसके माता वैष्णो देवी के पवित्र तीर्थ जाने का संकेत मिल जाता है। कहते हैं कि बड़े–बड़े ऋषि–मुनि तथा राजा–महाराजा भी इस तीर्थ में आकर जप–तप किया करते थे। पांडवों के पिता राजा पांडु अपनी दोनों पत्नियों कुंती और माद्री के साथ लंबे समय तक यहाँ रहे थे। माता की पवित्र गुफ़ा में सप्त ऋषियों, पांडवों और प्रह्लाद के कुछ चिह्न मिलते हैं। इन से पता चलता है कि पूर्व काल में साधारण जनता के साथ–साथ राजा–महाराज भी इस तीर्थ पर आया करते थे। यह क्रम आज तक चल रहा है।

ईश्वर तीन रूपों में प्रकट होते हैं। सृष्टि कर्ता के रूप में ब्रह्मा, पालनहार के रूप में विष्णु और संहारक के रूप में महेश। इन तीन रूपों की तीन शक्तियाँ मानी जाती हैं। सरस्वती, लक्ष्मी तथा महाकाली। विश्वास किया जाता है कि वैष्णो देवी ईश्वर की इन तीनों शक्तियों की अवतार हैं। माता वैष्णों देवी के मंदिर में तीन पिंडियों की पूजा की जाती है। ये तीन पिंडियाँ इन्हीं तीन शक्तियों की प्रतीक हैं।

श्री वैष्णों देवी का मंदिर भक्तों के लिए पूरे वर्ष खुला रहता है। चैत्र तथा आश्विन के नवरात्रों में माता के दर्शनों का विशेष महत्तव माना जाता है। यहाँ विभिन्न जातियों तथा धर्मों के लोग समस्त भेद–भाव भुलाकर आते हैं। एक साथ उठते–बैठते हैं। एक साथ यात्रा करते हैं। तभी तो यह धर्मस्थल भारत की विविधता में एकता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होता है।

जम्मू से कटड़ा तक पक्की सड़क है और मोटरकार, बस आदि से जाया जा सकता है। उसके आगे यात्री पैदल, खच्चरों पर, पालकियों में अथवा पिट्ठुओं पर जाते हैं। भक्त–जन वैष्णों देवी जी यात्रा में भक्ति–गीत तथा "जय माता की" के जयकारे बार–बार बोलते जाते हैं। इन जयकारों से भक्त–जनों में एक अद्भुत स्फूर्ति आती है और वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं। कटड़ा से लगभग एक किलोमीटर चलने पर दर्शनी दरवाज़ा आता है। यहाँ से चित्रकूट पर्वत के दर्शन होते हैं। थोड़ी दूर आगे जाने पर 'बान गंगा' दिखाई देती है जिसमें यात्री स्नान आदि करते हैं। 'बान गंगा' से आगे यात्रा के दो मार्ग हैं। एक सड़क का है और दूसरा पगडंडी का। कुछ वर्ष पहले पगडंडी का रास्ता बड़ा दुर्गम था। पानी का प्रायः अभाव रहता था। रात को प्रकाश का भी उचित प्रबंध नहीं था। परन्तु आज तो काया ही पलट गई है। रास्ते में बिजली का प्रकाश रात को भी दिन बना देता है। पीने के पानी का सुप्रबंध है। उचित दामों पर खाने–पीने की चीज़ें मिलती हैं। स्थान–स्थान पर विश्राम–स्थलों और शौचालयों का प्रबंध है। वैष्णों देवी से संबंधित समस्त कार्य एक प्रबंधक मंडल (वैष्णों देवी "श्राइन बोर्ड") करता है। इसके अध्यक्ष राज्य के राज्यपाल होते हैं।

'बान–गंगा' से आगे लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर 'चरण–पादुका' नामक स्थान है। यहाँ एक छोटा–सा मंदिर है जिसमें यात्री माता के चरणों की पूजा करते हैं। 'चरण–पादुका' से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर 'आदि कुमारी' नामक पवित्र स्थान है। यह स्थान अत्यंत रमणीय है। मीलों तक शतशृंग पर्वत की

ऊँची–ऊँची चोटियाँ तथा चीड़ और देवदार के वृक्षों के मनोहर दृश्य देखते ही बनते हैं। यहाँ से दूर नीचे कटड़ा और इसके आस–पास का जो दृश्य दिखाई देता है, उसे देखकर मन पुलकित हो उठता है। आदि कुमारी के स्थान पर वैष्णों देवी ने तपस्या की थी और कुमारी रहने का व्रत धारण किया था। आम बोलचाल में इस स्थान को 'अद्कवारी' कहा जाता है। कहते हैं यहाँ पर माता ने महिषासुर नामक राक्षस का वध किया था। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यहाँ धर्मशालाओं और दुकानों का निर्माण किया गया है। यहाँ 'गर्भजून' नामक एक छोटी सी गुफा है। इसकी लंबाई लगभग पाँच मीटर है। इसके बीच का रास्त इतना संकरा है कि इसे रेंग कर पार किया जाता है। भक्तजनों का विश्वास है कि इसी गर्भजून में बैठकर वैष्णों देवी ने नौ महीनों तक तप किया था।

'आदि कुमारी' के साथ ही खड़ी–चढ़ाई आरंभ हो जाती है। यह चढ़ाई हाथी के मस्तक के समान होने के कारण 'हाथी मत्था' कहलाती है। संपूर्ण यात्रा का यह सबसे दुर्गम भाग है। 'हाथी मत्था' से आगे 'साँझी छत' आती है। यह यात्रा का सबसे ऊँचा स्थल है। यहाँ से एक पगडंडी निकलती है जो भैरो–मंदिर से होते हुए भवन (माता के मंदिर) तक जाती है। कुछ समय पहले यात्रा का यही रास्ता था। आजकल यात्री इस रास्ते से नहीं जाते। हाँ! कुछ साहसी यात्री लौटती बार भैरो–मंदिर की पगडंडी से होकर आते हैं।

'सांझी छत' के आगे यात्रियों को समतल तथा ढलान वाले रास्ते में से जाना होता है। यहाँ से मंदिर चार किलोमीटर रह जाता है। भवन की ऊँची–ऊँची अट्टालिकाएँ प्रत्यक्ष दिखाई देती हैं। इनमें सैकड़ों नहीं हज़ारों लोगों के रहने का प्रावधान है। पंक्तियों से सजी दुकानों और आते–जाते यात्रियों को देखकर किसी विशेष उत्सव का भ्रम होने लगता है। यात्री सोच ही नहीं सकते कि इन दुर्गम पहाड़ों के बीच इतनी ऊँची–ऊँची अट्टालिकाएँ कब और कैसे बनाई गई होंगी, इसी धुन में

यात्री भवन तक आ जाते हैं।

गुफ़ा प्रवेश से पहले यात्री 'चरण गंगा' के जल से स्नान करते हैं। जयकारों तथा भक्ति–गीतों से समाँ बंध जाता है। दर्शन करने के लिए यात्रियों को एक संकरी गुफ़ा में से होकर आना पड़ता है। इसमें शीतल जल सदा बहता रहता है। इसमें से गुज़रना कठिन होने के कारण अब दर्शनों के लिए दो सुरंगों का निर्माण किया गया है एक का प्रयोग मंदिर तक जाने के लिए और दूसरी का बाहर आने के लिए किया जाता है।

गुफ़ा–प्रवेश से पूर्व भक्त जन "जय माता की" बोलते हुए भजन कीर्तन करते हैं और घंटियाँ बजाते हैं। देवी की आराधना करते हैं। धूप–दीप से बने पवित्र वातावरण में भक्त जन माता के दर्शन करते हैं। आरती उतारते हैं। यथाशक्ति सोना, चाँदी, रुपये, फल–फूल, मिष्ठान्न आदि अर्पण करते हैं। नारियल, लाल वस्त्र, ध्वजा आदि भी माता के चरणों में चढ़ाए जाते हैं। इस प्रकार दर्शन करने के पश्चात् अत्यंत संतुष्ट मन से भक्तजन अपने–अपने घरों को लौटते हैं।

प्रश्न–अभ्यास

बोध और विचार

1. देवी (शक्ति) के कोई तीन नाम लिखें।
2. ईश्वर के तीन रूपों और उनकी विभिन्न शक्तियों के नाम लिखें।
3. 'वैष्णों देवी' तीर्थ पर प्रायः किन दिनों भक्तों की भीड़ अधिक होती है ?
4. 'दर्शनी–दरवाज़े' के विषय में दो वाक्य लिखें।
5. 'वैष्णों देवी प्रबंधक मंडल' के अध्यक्ष कौन होते हैं ?
6. 'आदि कुमारी' नामक स्थान के विषय में चार वाक्य लिखें।
7. 'वैष्णों देवी' के चरणों में प्रायः किन वस्तुओं की भेंट चढ़ाई जाती है?
8. कटड़ा से वैष्णों–भवन तक कौन–कौन से मुख्य विश्राम–स्थल आते हैं ?

भाषा – अध्ययन

1. एक दूसरे के विपरीत अर्थ के सूचक शब्द विपरीतार्थक, विलोम अथवा विपर्याय कहलाते हैं। जैसे :– प्राचीन का विपरीत नवीन तथा दूर का निकट होता है। इसी प्रकार निम्न शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें :

   धर्म, प्रसिद्ध, साधारण, आदि, प्रकाश, उचित, सुविधा, विश्वास, साहसी, प्रत्यक्ष, संतुष्ट, पवित्र, अभाव।

2. जिन शब्दों के अर्थों में समानता हो उन्हें पर्यायवाची अथवा समानार्थक शब्द कहते हैं। जैसे :– अग्नि : आग, पावक, अनल आदि। इसी प्रकार निम्न शब्दों के तीन–तीन पर्यायवाची शब्द लिखें:–

   ईश्वर, काल, चरण, तीर्थ, धर्म, प्रकृति, रास्ता, भवन, दुर्गम।

3. पाठ में आए कोई दस सामासिक शब्द लिखें और बताएँ कि ये सामासिक शब्द किस समास से संबंधित हैं। जैसे :– देवी–देवता : देवी और देवता : द्वंद्व समास

योग्यता –विस्तार

1. 'वैष्णों देवी की यात्रा' की भांति किसी और यात्रा का वर्णन करें जो आपने की हो।
2. जम्मू के तीर्थ–स्थलों के चित्र एकत्रित करके उनको एलबम में लगाएँ।

15. शिष्टाचार

मेरे पड़ोस में दो बच्चे रहते हैं – प्रदीप और भुवन। प्रदीप जब कभी मेरे पास आता है, पहले हाथ जोड़कर नमस्ते करता है। फिर 'चाचा जी' कहकर मुझसे बात करता है। बड़े ही मृदुल और शांत स्वर में वह बोलता है। किंतु भुवन दूसरी ही तरह से बात करता है। दूर से ही चिल्लात हुआ आता है, "मुन्नी के बाबूजी, आपको मेरे बाबूजी बुला रहे हैं।"

आसपास के सभी लोग प्रदीप की प्रशंसा करते नहीं थकते और भुवन के व्यवहार पर सबको हँसी आ जाती है। यों भुवन पढ़ने में तेज़ है और प्रदीप की अपेक्षा उसका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा है, फिर भी लोगों की प्रशंसा का पात्र प्रदीप ही है। इसका कारण है प्रदीप का बोल–व्यवहार लोगों का मन लुभा लेता है। दूसरे शब्दों में यों कहें कि प्रदीप का व्यवहार शिष्ट है जबकि भुवन का अशिष्ट।

समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए शिष्टाचार के नियम अवश्य जानने चाहिए और उन्हें अपनी आदत में सम्मिलित कर लेना चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अलग–अलग समाजों में शिष्टाचार के नियम भिन्न–भिन्न हैं, यद्यपि उनके आधार प्राय समान ही हैं।

शिष्टाचार का सबसे पहला गुण है, विनम्रता। हमारी वाणी में, हमारे व्यवहार में विनम्रता घुली होनी चाहिए। इसीलिए किसी बड़े को बुलाने पर 'हाँ', 'अच्छा', 'क्या' न कहकर 'जी हाँ' या 'जी नहीं' कहना चाहिए। किसी की बात का उत्तर ऐसे नहीं देना चाहिए कि सुननेवालों को लगे कि लट्ठ मारे जा रहा है।

विनम्रता केवल बड़ों के प्रति नहीं होती। बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति भी नम्रता और स्नेह का भाव होना चाहिए। सभी से बोलते हुए हमारी वाणी में मिठास रहनी चाहिए, कटुता या कर्कशता नहीं।

विनम्रता केवल भाषा की वस्तु नहीं। हमारे कर्म में भी विनम्रता होनी चाहिए। अपने यहाँ किसी के आने पर हमें उसका प्रसन्नता से स्वागत और यथोचित सत्कार करना चाहिए। अपने से बड़े व्यक्तियों के बैठ जाने के बाद ही हमें बैठना चाहिए। महिलाओं के प्रति हमारे व्यवहार में और भी विनम्रता होनी आवश्यक है। बस या रेल में किसी महिला को खड़ी देखकर अपनी सीट उन्हें बैठने के लिए दे देना शिष्ट आचरण है।

अपने से बड़े व्यक्तियों के समाज में ठहाका लगाकर हँसना या ज़ोर से बोलना अनुचित माना जाता है। इसी प्रकार बड़े लोगों के साथ चलते समय उनके आगे चलने लगना भी अशिष्टता है। हाँ, उनके लिए झट–से आगे होकर दरवाज़ा खोल देना या राह दिखाना शिष्ट व्यवहार है।

विनम्रता और दीनता में अंतर है। विनम्र होते हुए भी हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकते हैं। विनम्र व्यवहार का अर्थ चापलूसी नहीं है। यदि कभी यह महसूस हो कि जिसके प्रति हम विनीत हैं वह हमारा तिरस्कार कर रहा है अथवा हमें दीन–हीन जानकर हमारे प्रति दया की भावना प्रकट कर रहा है, तो उसकी कृपा प्राप्त करने की चेष्टा हमें नहीं करनी चाहिए।

शिष्टाचार का दूसरा विशेष गुण है दूसरों की निजी बातों में दखल न देना। हर व्यक्ति का अपना एक निजी जीवन होता है। इसीलिए हमें अकारण किसी से उसका वेतन, उम्र या जाति आदि पूछने से बचना चाहिए। यदि कोई कुछ लिख रहा है तो झाँक–झाँककर उसे पढ़ने की चेष्टा करना उजड्डपन कहा जाएगा। किसी के घर या दफ़्तर जाने पर उसकी वस्तुओं को बिना पूछे उलटने–पलटने लगना अशिष्टता है।

किसी का नाम लेने या लिखने के पहले श्री, श्रीमती या कुमारी लगाना अच्छी आदत है। कुछ लोग इनके स्थान पर पंडित, डॉक्टर, बाबू, लाला, मियाँ, मिर्ज़ा – जब

जैसी आवश्यकता होती है, लगाते हैं। इसी तरह कुछ लोग नाम के बाद 'जी' लगाते हैं।

यदि कोई कुछ कष्ट या असुविधा उठाकर हमारे लिए कोई काम करता है तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। इसका सबसे सरल तरीका है उसे धन्यवाद देना। यदि बस या रेल में कोई अपनी जगह हमें बैठने के लिए देता है तो उसे धन्यवाद अवश्य देना चाहिए। 'धन्यवाद' शब्द बोलते समय ऐसा लगना चाहिए कि हम उसे हृदय से धन्यवाद दे रहे हैं, केवल ऊपर–ऊपर से नहीं।

औरों के साथ भोजन करते समय हमें विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। हमें खाने में अधीरता नहीं दिखानी चाहिए। चबाने में मुँह से आवाज़ करना अच्छा नहीं माना जाता। अपने से बड़ों के भोजन समाप्त कर देने पर भी खाते रहना उचित नहीं है। यदि हमारे घर कोई अतिथि भोजन कर रहे हों तो उनकी रुचि का भोजन बनवाना उचित है। पर जब वे खा रहे हों तब उनके मना करने पर भी रोटी, पूड़ी आदि उनकी थाली में ज़बरदस्ती नहीं डालनी चाहिए।

शिष्टता का तीसरा आधार अनुशासन का पालन है। अनुशासन समाज के नैतिक नियमों का भी हो सकता है, और कानून की धाराओं का भी। उदाहरण के लिए किसी मंदिर, गुरुद्वारे या मस्जिद में जाने के पहले जूते उतार देना अनुशासन का पालन है। सड़क पर बाईं ओर चलना या जहाँ जाना मना हो, वहाँ न जाना कानून के अनुशासन का पालन है। समय का पालन करना सामाजिक नियमों का पालन है। ठीक समय पर कहीं पहुँचना अनुशासन भी सिखाता है और लाभ भी पहुँचाता है।

हमें हर तरह के अनुशासनों का सामान्य ज्ञान होना ही चाहिए। जैसे, किसी सभा में शोर मचाना अनुचित है। किसी वक्ता को अपनी बात कहने देने का मौका न देना अशिष्टता है। राष्ट्रगान के अवसर पर बैठे रहना या चलना या झूमना अशिष्ट व्यवहार है। जहाँ सब लोग बैठे हों वहाँ लेट जाना या पैर फैलाकर बैठना बहुत

अनुचित है। कभी–कभी थक जाने पर इच्छा होती है कि कुर्सी पर पैर रखकर बैठें या चारपाई पर निढाल होकर पड़े रहें। अन्य लोगों की उपस्थिति में हमें अपनी ऐसी इच्छा को दबा देना चाहिए। अपने मन को संयम में रखना शिष्ट व्यवहार के अत्यंत आवश्यक है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शिष्टाचार वह व्यवहार है, जिसके करने पर दूसरों के तथा अपने मन को प्रसन्नता होती है। इसके विपरीत अशिष्ट व्यवहार से दूसरों का दिल दुखता है और उससे अंत में हानि भी होती है।

– रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

प्रश्न'अभ्यास

बोध और विचार

1. दूसरों की प्रशंसा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है :–

(क) पढ़ने–लिखने में तेज़ होना।

(ख) अच्छा स्वास्थ्य होना।

(ग) हाथ जोड़कर नमस्ते कहना।

(घ) बोल–व्यवहार में शिष्ट होना।

2. निम्नलिखित अवसरों पर हमें कैसा आचरण करना चाहिए ?

(क) जब घर में कोई मेहमान आए।

(ख) जब कोई हमारे लिए कुछ काम करे।

(ग) जब हम भोजन कर रहे हों।

(घ) जब मेहमान को भोजन करा रहे हों।

(ङ) जब हम सभा में बैठे हों।

योग्यता–विस्तार

1. 'किसी का नाम लेने या लिखने से पहले श्री, श्रीमती आदि लगाना अच्छी आदत है।'
2. हिंदी में नाम के प्रारंभ में लगाए जाने वाले शब्दों की सूची बनाएँ।
3. शिष्ट आचरण की कुछ ऐसी बातें, जिन्हें तुम स्वयं अपनाना चाहो, चुनकर अपनी दैनिक (डायरी) में लिखें।